Faizane Chehal Ahadis (Hindi)

चालीस[40] फ़रामीने मुस्त़फ़ा ﷺ और उन की तौज़ीह़ पर मुश्तमिल किताब

# फ़ैज़ाने चेहल[40] अह़ादीस

इस किताब में है :


- निय्यत की अहम्मिय्यत 11
- कामिल ईमान वाला कौन ? 17
- बुख़ार की ब-र-कतें 39
- इयादत की फ़ज़ीलत 49
- ईसाले सवाब का सुबूत 91
- दुन्या की बेहतरीन मताअ़ 96


इन के इलावा भी बहुत से मौज़ूआत

# फ़ैज़ाने चेहल अह़ादीस

येह किताब ( **फ़ैज़ाने चेहल अह़ादीस** )

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश की है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत़्लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

**राबित़ा : मजलिसे तराजिम** (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

Mobile: 09374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

## आ़शिक़ाने रसूल मु-तवज्जेह हों !!!

इस किताब में बोक्स में दी गई अह़ादीस का हिन्दी तरजमा अ़-रबी मतन के नीचे ही रखा गया है, लिहाज़ा क़ारिईन से अ़र्ज़ है कि बोक्स में लिखी गई अह़ादीस के हिन्दी तरजमे को भी अ़-रबी की त़रह़ दाएं (Right) ख़ानों की त़रफ़ से पढ़ें ।

**मजलिसे तराजिम** (दा'वते इस्लामी)

अह़मदआबाद, इन्डिया ।

चालीस फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और उन की तौज़ीह़ पर मुश्तमिल किताब

# फ़ैज़ाने चेहल40 अह़ादीस

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शो'बए इस्लाही़ कुतुब)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

الصلوۃ والسلام علیک یارسول اللہ وعلی اٰلک واصحابک یا حبیب اللہ

**नाम किताब : फ़ैज़ाने चेहल अह़ादीस**

**पेशकश** : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शो'बए इस्लाह़ी कुतुब)

**सिने त़बाअ़त** : मुह़र्रमुल ह़राम 1435 सि.हि.

नाशिर : **मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद**

## मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

**मुम्बई** : 19,20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

**देहली** : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

**नागपुर** : मुह़म्मद अ़ली सराय रोड (C / 0) जामिअ़तुल मदीना, कमाल शाह बाबा दरगाह के पास, मोमिनपुरा, नागपुर फ़ोन : 0712 -2737290

**अजमेर शरीफ़** : 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, : (0145) 2629385

**हुब्ली** : A.J. मुढोल कोम्पलेक्स, A.J. मुढोल रोड, ब्रीज के पास, हुब्ली - 580024. फ़ोन : 09343268414

**ह़ैदरआबाद** : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

**म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं**

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

# ''**40 फ़रामीने मुस्त़फ़ा**'' के 13 हुरूफ़ की निस्बत से **इस किताब** को पढ़ने की ''**13 निय्यतें**''

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : '' نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ ٥ मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।''

(المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ٥٩٤٢، ج٦، ص١٨٥)

**दो म-दनी फूल :** ﴿1﴾ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
﴿2﴾ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴿1﴾ हर बार ह़म्द व ﴿2﴾ सलात और ﴿3﴾ तअ़व्वुज़ व ﴿4﴾ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा)। ﴿5﴾ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ा-लआ़ करूंगा। ﴿6﴾ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴿7﴾ क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा। ﴿8﴾ क़ुरआनी आयात और (9) अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा ﴿10﴾ जहां जहां ''अल्लाह'' का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴿11﴾ जहां जहां ''सरकार'' का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴿12﴾ (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) ''याद दाश्त'' वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा। ﴿13﴾ किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा। (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़्लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

# अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़् शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

الحمد لله على إحسانه و بفضل رسوله صلى الله تعالى عليه وسلم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छ शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه (2) शो'बए तराजिमे कुतुब
(3) शो'बए दर्सी कुतुब (4) शो'बए इस्लाही कुतुब
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब (6) शो'बए तख़्रीज

**''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल

मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **''दा'वते इस्लामी''** की तमाम मजालिस ब शुमूल **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

# पहले इसे पढ़ लीजिये

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !**

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِیْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ (پ۲۱، الاحزاب:۲۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद इर्शाद फ़रमाया : خَيْرُ الْهَدْیِ هَدْیُ مُحَمَّدٍ या'नी बेहतरीन रास्ता मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का रास्ता है। اَوْ كَمَا قَالَ

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، باب الاعتصام بالسنہ...الخ، الحدیث ۱۰، ج۱، ص۱۰۶ ملخصاً)

यक़ीनन **नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रामीने अ़ज़ीमा में हमारे लिये नसीहतों के अनमोल ख़ज़ाने पिन्हां हैं। ज़ेरे नज़र किताब **"फ़ैज़ाने चेहल अहादीस"** में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के 40 इर्शादाते आ़लिया पेश किये गए हैं जिन का इन्तिख़ाब मुख़्तलिफ़ कुतुबे अहादीस से किया गया है। इस किताब का उस्लूब कुछ यूं हैं कि सब से पहले अस्ल अ़-रबी इबारत मुन्दरज है फिर त़-लबा व त़ालिबात के लिये उस का तह़्तुल्लफ़्ज़ तरजमा पेश करने के बा'द दीगर इस्लामी भाइयों और बहनों की आसानी के लिये बा मुहा़-वरा तरजमा भी तह़रीर कर दिया गया है। हर ह़दीस का माख़ज़ जिल्द व सफ़हा नम्बर, बाब और रक़मुल ह़दीस के साथ बयान किया गया है। इस के बा'द हर ह़दीस की

मुख़्तसर वज़ाह़त दर्ज है। ज़रूरतन शर-ई मसाइल भी लिख दिये गए हैं। वज़ाह़त के बा'द फ़िक्रे मदीना के उ़न्वान से शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा **मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा म-दनी इन्आ़मात की रोशनी में ख़ुद एह़तिसाबी की म-दनी सोच देने की कोशिश की गई है। इन सब से आख़िर में दुआ़ भी लिख दी है।

**अहले इल्म** पर मख़्फ़ी नहीं कि अह़ादीस का तरजमा और फिर उस की वज़ाह़त बेह़द मुश्किल काम है क्यूं कि ह़दीस तफ़्सीलाते अ़क़ाइद और अह़कामे शरइ़य्या के इस्तिम्बात़ का शर-ई माख़ज़ भी है। अगर तरजमा व वज़ाह़त करने वाले से ज़रा भी चूक हो गई तो कुछ बई़द नहीं कि शारेए़ इस्लाम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मक़्सूद ही अदा होने से रह जाए। चुनान्चे बर बिनाए एह़तियात़, तरजमा व वज़ाह़त के सिल्सिले में अपने अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰه की कुतुब म-सलन मिरक़ातुल मफ़ातीह़, मिरआतुल मनाजीह़, अशिअ़- अ़तुल्लम्आ़त, नुज़्ह़तुल क़ारी, शर्ह़े मुस्लिम लिन्न-ववी और बहारे शरीअ़त को पेशे नज़र रखा गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सारी दुन्या में **"नेकी की दा'वत"** को आ़म करने के लिये तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** शबो रोज़ कोशां है। इस म-दनी तह़रीक की बुन्याद शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा **मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने रखी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! येह आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

की कोशिशों का स-मरा है कि बाबुल मदीना कराची से उठने वाली म-दनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** देखते ही देखते बाबुल इस्लाम (सिन्ध), पंजाब, सरह़द, कश्मीर, बलूचिस्तान और फिर मुल्क से बाहर हिन्द, बंगलादेश, अ़रब अमारात, सीलंका, बरत़ानिया, ऑस्ट्रेलिया, कोरिया, जुनूबी अफ़्रीक़ा यहां तक कि (ता दमे तह़रीर) दुन्या के तक़्रीबन **63 मुमालिक** तक पहुंच गई। हज़ारों मक़ामात पर **सुन्नतों भरे हफ़्तावार इज्तिमाआ़त** हो रहे हैं और सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करने वाले बे शुमार मुबल्लिग़ीन इस मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त इस्लाह़े उम्मत के कामों में मस्रूफ़ हैं कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ"

*अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में*
*ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो*

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज दा'वते इस्लामी 30 से ज़ाइद शो'बों में सुन्नतों की ख़िदमत कर रही है, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दरियाए फ़ैज़ से जहां इस्लामी भाई मुस्तफ़ीज़ होते वहीं इस्लामी बहनें भी किसी से पीछे नहीं हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! **इस्लामी बहनों** के भी **शर-ई** पर्दे के साथ **मु-तअ़द्दद मक़ामात पर हफ़्तावार इज्तिमाआ़त** होते हैं। ला ता'दाद बे अ़मल इस्लामी बहनें बा अ़मल, नमाज़ी और म-दनी बुरक़ओं की पाबन्द बन चुकी हैं। दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में अक्सर घरों के अन्दर इन के तक़्रीबन रोज़ाना हज़ारों मदारिस बनाम **मद्र-सतुल मदीना ( बराए**

**बालिग़ात )** भी लगाए जाते हैं, एक अन्दाज़े के मुताबिक़ फ़क़त (बाबुल मदीना कराची) में इस्लामी बहनों के तक़रीबन 2000 मद्रसे रोज़ाना लगते हैं जिन में इस्लामी बहनें क़ुरआने पाक, नमाज़ और सुन्नतों की मुफ़्त ता'लीम पातीं और दुआएं याद करती हैं। इस्लामी बहनों को **''जामिअ़तुल मदीना लिल बनात'' में आ़लिमा कोर्स और शरीअ़त कोर्स की मुफ़्त ता'लीम** दी जाती है । ता दमे तह़रीर पाकिस्तान भर में इस्लामी भाइयों और बहनों के अलग अलग तक़रीबन 100 जामिआ़तुल मदीना क़ाइम किये जा चुके हैं। इस्लामी बहनों को ज़रूरिय्याते दीन से रू शनास करवाने के लिये अपनी नौइय्यत का मुन्फ़रिद **''फ़ैज़ाने क़ुरआन व ह़दीस कोर्स''** भी शुरूअ़ किया गया है। इस्लामी भाइयों में भी येह कोर्स जारी है। **''फ़ैज़ाने चेहल अह़ादीस''** किताब भी बुन्यादी तौ़र पर इसी कोर्स के लिये तय्यार की गई है लेकिन दीगर इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें भी इस किताब से यक्सां मुस्तफ़ीद हो सकते हैं।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि हमें **''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश''** करने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **म-दनी क़ाफ़िलों** का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

**शो'बए इस्लाही कुतुब ( मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या )**

# फ़ेहरिस्त


| ह़दीस नम्बर | उ़न्वान | सफ़ह़ा नम्बर | ह़दीस नम्बर | मज़ामीन | सफ़ह़ा नम्बर |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | निय्यत की अहम्मिय्यत | 11 | 21 | कफ़न | 67 |
| 2 | ईमान की ब-र-कत | 15 | 22 | मुर्दों का तज़्किरए ख़ैर | 70 |
| 3 | ईमाने कामिल | 17 | 23 | सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की क़ब्रे मुबारक | 72 |
| 4 | गुमराहों से बचो | 20 | 24 | मय्यित पर रोना | 75 |
| 5 | बद मज़्हब की तौक़ीर करना कैसा ? | 23 | 25 | बैतुल ह़म्द | 78 |
| 6 | सो शहीदों का सवाब | 25 | 26 | साबिरा मां को जन्नत की बिशारत | 81 |
| 7 | अच्छे त़रीक़े की तरग़ीब | 28 | 27 | शहीद और क़र्ज़ | 84 |
| 8 | बिद्अ़त किसे कहते हैं ? | 31 | 28 | शहादत की त़लब | 86 |
| 9 | तक्लीफ़ और गुनाहों का मिटना | 36 | 29 | क़ब्रों की ज़ियारत | 88 |
| 10 | बुख़ार की ब-र-कतें | 39 | 30 | ईसाले सवाब | 91 |
| 11 | सब्र, मुसीबत और मर्तबए कमाल | 43 | 31 | दुन्या की बेहतरीन मताअ़ | 96 |
| 12 | शहादतें | 46 | 32 | मह्र | 98 |
| 13 | इ़यादत की फ़ज़ीलत | 49 | 33 | शोहर की इत़ाअ़त | 101 |
| 14 | दुआ़ए शिफ़ा | 52 | 34 | जन्नती औ़रत | 103 |
| 15 | दवा | 54 | 35 | पर्दा | 105 |
| 16 | ता'वीज़ | 56 | 36 | औ़रत का मर्द को देखना ? | 107 |
| 17 | लज़्ज़तों को ख़त्म करने वाली चीज़ | 59 | 37 | अज्नबिया औ़रत के साथ तन्हाई ? | 109 |
| 18 | मौत की आरज़ू | 61 | 38 | ना पसन्दीदा चीज़ | 111 |
| 19 | सूरए यासीन | 63 | 39 | बिला वजह त़लाक़ मांगना | 113 |
| 20 | मौत के वक़्त तल्क़ीन | 65 | 40 | इद्दत की मुद्दत | 115 |

## اَلْحَدِيْثُ الْاَوَّلُ — निय्यत की अहम्मिय्यत

| عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّاب | قَالَ | سَمِعْتُ | رَسُوْلَ اللّٰهِ |
|---|---|---|---|
| हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब से (रिवायत है) | कहा उन्हों ने (कि) | मैं ने सुना | अल्लाह के रसूल (को) |

| يَقُوْلُ | الْاَعْمَالُ | بِالنِّيَّةِ | وَ |
|---|---|---|---|
| फ़रमाते हुए | आ'माल | निय्यत ही के साथ (हैं) | और |

| لِامْرِئٍ | مَّا | نَوٰى | فَمَنْ |
|---|---|---|---|
| हर शख़्स के लिये है | वोह जिस | की उस ने निय्यत की | तो जिस |

| كَانَتْ هِجْرَتُهٗ | اِلَى اللّٰهِ | وَرَسُوْلِهٖ |
|---|---|---|
| की हिजरत थी | अल्लाह की त़रफ़ | और उस के रसूल (की त़रफ़) |

| فَهِجْرَتُهٗ | اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ | وَمَنْ |
|---|---|---|
| तो उस की हिजरत | अल्लाह और उस के रसूल की त़रफ़ है | और जिस |

| كَانَتْ هِجْرَتُهٗ | لِدُنْيَا | يُصِيْبُهَا | اَوِ |
|---|---|---|---|
| की हिजरत थी | दुन्या के लिये | जिस को वोह ह़ासिल करे | या |

| امْرَءَةٍ | يَتَزَوَّجُهَا | فَهِجْرَتُهٗ |
|---|---|---|
| औ़रत (की त़रफ़) | जिस से वोह निकाह़ करे | तो उस की हिजरत |

| اِلٰى مَا | هَاجَرَ | اِلَيْهِ |
|---|---|---|
| (उसी की) त़रफ़ है | हिजरत की उस ने | जिस की त़रफ़ |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है उन्हों ने कहा, मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : आ'माल (का सवाब) निय्यत ही पर है हर शख़्स के लिये वोही है जो उस ने निय्यत की, तो जिस की हिजरत अल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और रसूल عَزَّ وَجَلَّ की त़रफ़ हो उस की हिजरत अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ ही है और जिस की हिजरत दुन्या की त़रफ़ हो जिसे वोह ह़ासिल करे या किसी औ़रत की त़रफ़ हो जिस से वोह निकाह़ करे तो उस की हिजरत उसी की त़रफ़ है जिस की त़रफ़ उस ने हिजरत की।

(صحیح البخاری، کتاب العتق، باب الخطاء والنسیان... الخ، الحدیث ۲۵۲۹، ج۲، ص۱۵۳)

## वज़ाह़त :

मुसन्निफ़ीने ह़दीस उ़मूमन अपनी किताब की इब्तिदा में इस ह़दीस को ला कर इस बात की त़रफ़ इशारा करते हैं कि तह़सीले इ़ल्म से क़ब्ल निय्यत की दुरुस्तगी ज़रूरी है। (ماخوذ از اشعۃ اللمعات، ج۱، ص۳۵)

इस ह़दीस का मत़लब येह है कि आ'माल का सवाब निय्यत पर ही है, बिग़ैर निय्यत किसी अ़मल पर सवाब का इस्तिह़क़ाक़ (या'नी ह़क़) नहीं। आ'माल अ़मल की जम्अ़ है और इस का इत़्लाक़ आ'ज़ा, ज़बान और दिल तीनों के अफ़्आ़ल पर होता है और यहां आ'माल से मुराद आ'माले सालिह़ा (या'नी नेक आ'माल) और मुबाह़ अफ़्आ़ल हैं। और निय्यत लु-ग़वी त़ौर पर दिल के पुख़्ता इरादे को कहते हैं और शरअ़न इ़बादत के इरादे को निय्यत कहा जाता है। याद रखिये कि इ़बादत की दो क़िस्में हैं :

**(1) मक़्सूदा :** जैसे नमाज़, रोज़ा कि इन से मक़्सूद हुसूले सवाब है इन्हें अगर बिग़ैर निय्यत अदा किया जाए तो येह सह़ीह़ न होंगे इस लिये कि इन से मक़्सूद सवाब था और जब सवाब मफ़्क़ूद हो गया तो इस की वजह से अस्ल शै ही अदा न होगी।

**(2) ग़ैर मक़्सूदा :** वोह जो दूसरी इ़बादतों के लिये ज़रीआ़ हों जैसे नमाज़ के लिये चलना, वुज़ू, ग़ुस्ल वग़ैरा । इन इ़बादाते ग़ैर मक़्सूदा को अगर कोई निय्यते इ़बादत के साथ करेगा तो उसे सवाब मिलेगा और अगर बिला निय्यत करेगा तो सवाब नहीं मिलेगा मगर इन का ज़रीआ़ या वसीला बनना अब भी दुरुस्त होगा और इन से नमाज़ सह़ीह़ हो जाएगी ।

(माख़ूज़ अज़् नुज़्हतुल क़ारी शर्ह़े सह़ीहुल बुख़ारी, जि. 1, स. 226)

एक अ़मल में जितनी निय्यतें होंगी उतनी नेकियों का सवाब मिलेगा, म-सलन मोह़ताज क़राबत दार की मदद करने में अगर निय्यत फ़क़त़ लि वज्हिल्लाह (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये) देने की होगी तो एक निय्यत का सवाब पाएगा और अगर सिलए रेह़मी की निय्यत भी करेगा तो दोहरा सवाब पाएगा ।

(اشعۃ اللمعات، ج۱، ص۳۶)

इसी त़रह़ मस्जिद में नमाज़ के लिये जाना भी एक अ़मल है इस में बहुत सी निय्यतें की जा सकती हैं, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 5 सफ़ह़ा 673 में इस के लिये चालीस निय्यतें बयान कीं और फ़रमाया : बेशक जो इ़ल्मे निय्यत जानता है एक एक फ़े'ल को अपने लिये कई कई नेकियां कर सकता है ।

बल्कि मुबाह़ कामों में भी अच्छी निय्यत करने से सवाब मिलेगा, म-सलन ख़ुश्बू लगाने में इत्तिबाए़ सुन्नत, ता'ज़ीमे मस्जिद, फ़रह़ते दिमाग़ और अपने इस्लामी भाइयों से ना पसन्दीदा बू दूर करने की निय्यतें हों तो हर निय्यत का अलग सवाब होगा ।

(اشعۃ اللمعات، ج۱، ص۳۷)

**मदीना :** अच्छी अच्छी निय्यतों से मु-तअ़ल्लिक़ रहनुमाई के लिये, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा बयान ''निय्यत का फल'' और निय्यतों से मु-तअ़ल्लिक़ आप के मुरत्तब कर्दा कार्ड या पेम्फ़्लेट **मक-त-बतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन ह़ासिल फ़रमाएं।

## फ़िक्रे मदीना :

क्या आप ने आज कुछ न कुछ जाइज़ कामों से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कीं ? नीज़ कम अज़ कम दो को इस की तरग़ीब दिलाई।

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें हर जाइज़ काम में कुछ न कुछ अच्छी निय्यतें करने और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

## ईमान की ब-र-कत اَلْحَدِیْثُ الثَّانِیْ

| عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ | قَالَ | سَمِعْتُ | رَسُوْلَ اللّٰهِ |
|---|---|---|---|
| ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित से मरवी है | उन्हों ने कहा (कि) | मैं ने सुना | अल्लाह के रसूल को |

| يَقُوْلُ | مَنْ | شَهِدَ | أَنْ | لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ |
|---|---|---|---|---|
| फ़रमाते हुए | जो | गवाही दे | कि | अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं |

| وَ | أَنَّ | مُحَمَّدًا (صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہ وسلم) | رَّسُوْلُ | اللّٰهِ |
|---|---|---|---|---|
| और | बेशक | मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) | रसूल (हैं) | अल्लाह (के) |

| حَرَّمَ | اللّٰهُ | عَلَيْهِ | النَّارَ |
|---|---|---|---|
| ह़राम फ़रमा देता है | अल्लाह | उस पर | आग (दोज़ख़ की) |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि उन्हों ने कहा, मैं ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : ''जो शख़्स इस बात की गवाही दे कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) अल्लाह के रसूल हैं तो अल्लाह तआ़ला उस पर दोज़ख़ की आग ह़राम फ़रमा देता है।''

(مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الایمان، الفصل الثالث، الحدیث ۳۶، ج۱، ص۲۸)

## वज़ाह़त :

गवाही देने से मुराद तमाम इस्लामी अ़क़ाइद क़बूल कर लेना है और दोज़ख़ की आग ह़राम होने का मत़लब येह है कि जिस के अ़क़ाइद दुरुस्त हैं वोह दोज़ख़ में हमेशा न रहेगा या इस से वोह शख़्स मुराद है जो ईमान लाते ही फ़ौत हो जाए।

(माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 56)

**याद रखिये !** तौह़ीद व रिसालत की गवाही के बा वुजूद अगर आदमी से कोई ऐसा क़ौल या फे़'ल पाया गया जिस को सरकार

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुफ़्र की निशानी फ़रमाया हो तो शरीअ़ते मुत़ह्हरा के हुक्म के मुत़ाबिक़ वोह काफ़िर हो जाएगा अगर्चे ब ज़ाहिर तौह़ीद व रिसालत की तस्दीक़ व इक़रार करता हो, जैसे बुत को सज्दा करना, ज़ुन्नार बांधना वग़ैरा। (ماخوذ از اشعۃ اللمعات، ج۱، ص۴۰)

जिस शख़्स ने गुनाहे कबीरा किये हों और तौबा किये बिग़ैर मर गया हो वोह अल्लाह तआ़ला की मशिय्यत में है वोह चाहे तो उस को मुआ़फ़ कर दे और उस को इब्तिदाअन जन्नत में दाख़िल कर दे और अगर चाहे तो उस को उतनी देर अ़ज़ाब दे जितना उसे (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) को मन्ज़ूर हो और फिर जन्नत में दाख़िल कर दे। लिहाज़ा जो शख़्स भी अ़क़ीदए तौह़ीद व रिसालत पर फ़ौत हुवा उस को दोज़ख़ का दाइमी अ़ज़ाब नहीं होगा चाहे वोह गुनाहगार क्यूं न हो जब कि इस के बर अ़क्स जिस शख़्स की मौत कुफ़्र पर वाक़ेअ़ हुई वोह जन्नत में दाख़िल नहीं होगा ख़्वाह उस ने ढेरों नेकिया कर रखी हों। (ماخوذ از شرح مسلم للنووی، کتاب الایمان، ج۱، ص۴۱)

## फ़िक्रे मदीना :

क्या आज आप ने कम अज़् कम एक बार (बेहतर येह है कि सोने से क़ब्ल) सलातुत्तौबा पढ़ कर दिन भर के बल्कि साबिक़ा होने वाले तमाम गुनाहों से तौबा कर ली ? नीज़ ख़ुदा न ख़्वास्ता गुनाह हो जाने की सूरत में फ़ौरन तौबा कर के आयन्दा वोह गुनाह न करने का अ़ह्द किया ?

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें ईमान की सलामती नसीब फ़रमा और गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## ईमाने कामिल

**اَلْحَدِيْثُ الثَّالِثُ**

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَنْ أَنَسٍ | قَالَ | قَالَ | رَسُوْلُ اللّٰهِ |
| ह़ज़रते अनस से रिवायत है | कहा उन्हों ने (कि) | फ़रमाया | अल्लाह के रसूल (ने) |
| لَا يُؤْمِنُ | أَحَدُكُمْ | حَتّٰى | أَكُوْنَ |
| ईमान वाला नहीं | तुम में से कोई भी | यहां तक कि | मैं हो जाऊं |

| | | |
|---|---|---|
| أَحَبَّ | اِلَيْهِ | مِنْ وَّالِدِهٖ |
| ज़ियादा मह़बूब | उस की त़रफ़ (उसे) | उस के वालिदैन से |
| وَ | وَلَدِهٖ | وَالنَّاسِ أَجْمَعِيْنَ |
| और | उस की औलाद से | और तमाम लोगों से |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि, कोई शख़्स उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उस के नज़्दीक उस के मां, बाप, औलाद और तमाम लोगों से ज़ियादा मह़बूब न हो जाऊं।

(صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب حب الرسول من الایمان، الحدیث ۱۵، ج۱، ص ۱۷)

### वज़ाह़त :

यहां मोमिन से मुराद मोमिने कामिल है। (مرقاۃ المفاتیح، ج۱، ص۱۴۴) और सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़ियादा मह़बूब होने का मत़लब येह है कि हुक़ूक़ की अदाएगी में सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ऊंचा माने इस त़रह़ कि आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के लाए हुए दीन को तस्लीम करे, आप

(صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की ता'ज़ीम व अदब बजा लाए और हर शख़्स और हर चीज़ या'नी अपनी ज़ात, अपनी औलाद, अपने मां बाप, अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब और अपने माल व अस्बाब पर आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की रिज़ा व खुशी को मुक़द्दम रखे ।

(ماخوذ از اشعۃ اللمعات، ج۱، کتاب الایمان، فصل اول، ص۵۰)

यहां महबूब से मुराद त़ब्ई़ महबूब है न कि सिर्फ़ अ़क़्ली क्यूं कि औलाद को मां बाप से त़ब्ई़ उल्फ़त होती है, येही मह़ब्बत हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ियादा होनी चाहिये ।

(माखूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 30)

इन्सान कभी उस चीज़ से मह़ब्बत करता है जिस से उस के ह़वास को लज़्ज़त ह़ासिल होती है म-सलन ह़सीनो जमील सूरतें, अच्छी आवाज़ें । कभी उन चीज़ों से मह़ब्बत करता है जिन से उस की अ़क़्ल को लज़्ज़त ह़ासिल होती है म-सलन इ़ल्मो ह़िक्मत की बातें, तक़्वा व त़हारत, उ़-लमा व मुत्तक़ी लोग । और कभी उस शख़्स से मह़ब्बत करता है जो उस के साथ हुस्ने सुलूक करे और उस से शर और ज़रर (या'नी नुक़्सान) को दूर करे ।

(ماخوذ از شرح مسلم للنووی، کتاب الایمان، باب خصائل من اتصف بھن وجد حلاوۃ الایمان، ج۱، ص۴۹)

और चूंकि महबूबे रब्बुल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मह़ब्बत किये जाने के तमाम अस्बाब के ऐसे जामेअ़ हैं कि आप के सिवा कोई दूसरा इस जामिइय्यत को नहीं पहुंच सकता लिहाज़ा आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) हर मोमिन के नज़्दीक उस की जान से भी ज़ियादा मह़बूब होने के मुस्तह़िक़ हैं और ख़ास कर इस सूरत

में ज़ियादा महबूब हैं कि आप महबूबे हक़ीक़ी या'नी ख़ुदा तआ़ला की त़रफ़ से रसूल हैं और ख़ुदा तक पहुंचाने वाले और उस की बारगाह में इ़ज़्ज़तो अ़-ज़मत वाले हैं।

(مرقاۃ المفاتیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج۱، ص۱۴۵)

## फ़िक्रे मदीना :

क्या आज आप ने अपने श-जरे के कुछ न कुछ अवराद और कम अज़ कम 313 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लिये।

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते महबूब (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## اَلْحَدِيْثُ الرَّابِعُ — गुमराहों से बचो

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَنْ أَبِیْ هُرَيْرَةَ | قَالَ | قَالَ | رَسُوْلُ اللّٰهِ |
| ह़ज़रते अबू हुरैरा से (रिवायत है) | कहा उन्हों ने | फ़रमाया | अल्लाह के रसूल (ने) |

| | | |
|---|---|---|
| يَكُوْنُ | فِیْ اٰخِرِالزَّمَانِ | دَجَّالُوْنَ كَذَّابُوْنَ |
| होंगे | आख़िरी ज़माने में | झूटे दज्जाल |

| | | | |
|---|---|---|---|
| يَأْتُوْنَكُمْ | مِّنَ الْاَحَادِيْثِ | بِمَا | لَمْ تَسْمَعُوْا اَنْتُمْ |
| (जो) लाएंगे तुम्हारे पास | ऐसी अह़ादीस | जो | नहीं सुनी होंगी तुम ने |

| | | | |
|---|---|---|---|
| وَلَآ | اٰبَاءُكُمْ | فَاِيَّاكُمْ | وَاِيَّاهُمْ |
| और न | तुम्हारे बाप दादा ने | तो बचो तुम (ऐसे लोगों से) | और दूर रहो उन से |

| | | |
|---|---|---|
| لَايُضِلُّوْنَكُمْ | وَ | لَايَفْتِنُوْنَكُمْ |
| (ताकि) न गुमराह कर दें वोह तुम को | और | न फ़ितने में डालें वोह तुम को |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आख़िरी ज़माने में झूटे दज्जाल होंगे वोह तुम्हारे सामने ऐसी अह़ादीस लाएंगे जिन को न तुम ने कभी सुना होगा और न तुम्हारे बाप दादा ने, तो ऐसे लोगों से बचो और उन्हें अपने क़रीब न आने दो, ताकि वोह तुम्हें गुमराह न करें और न फ़ितने में डालें।

(صحیح مسلم، مقدمہ، باب النھی عن الروایۃ... الخ، الحدیث ۷، ص ۹)

## वज़ाह़त :

**दज्जाल, द-जलुन** से बना है ब मा'ना फ़रेब और धोका, और दज्जाल का मा'ना है बड़ा फ़रेबी, मक्कार और धोकेबाज़, आख़िर ज़माने में बड़ा दज्जाल निकलेगा, उस से पहले छोटे दज्जाल होंगे। इस ह़दीस में ह़दीस घड़ने वालों की त़रफ़ इशारा है

और इस कलामे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुख़ात़ब या तो सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم हैं या क़ियामत तक आने वाले उ़-लमा, कि जिन को ह़दीस की वाक़िफ़िय्यत हो क्यूं कि अगर कोई जाहिल किसी ह़दीस को न सुने तो येह उस का अपना क़ुसूर है न कि सुनाने वाले का। इस ह़दीस से येह भी मा'लूम हुवा कि ह़दीस घड़ना सख़्त जुर्म है और घड़ने वाला सख़्त मुजरिम कि नबिय्ये पाक साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे दज्जाल व कज़्ज़ाब फ़रमाया है। येह भी मा'लूम हुवा कि बद मज़्हबों की सोह़बत से बचना अज़ ह़द ज़रूरी है क्यूं कि उन की सोह़बत मुसल्मान को ईमान जैसी अनमोल दौलत से मह़रूम कर सकती है।

(माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 158)

बद मज़्हबों के बारे में तफ़्सील जानने के लिये इन कुतुब का मुत़ा-लआ़ मुफ़ीद साबित होगा :

(1) तम्हीदुल ईमान (अज़ इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن)

(2) हुस्सामुल ह़-रमैन (अज़ इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن)

(3) बहारे शरीअ़त ह़िस्सए अव्वल (अज़ सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्त़रीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی)

(4) अल ह़क़्क़ुल मुबीन (अज़ ग़ज़ालिये दौरां मौलाना अह़मद सईद काज़िमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی)

(5) जाअल ह़क़ (अज़ ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی)

## फ़िक्रे मदीना :

क्या आज आप ने 12 मिनट किसी सुन्नी आ़लिम की इस्लामी किताब और फ़ैज़ाने सुन्नत के तरतीब वार कम अज़ कम चार सफ़ह़ात (दर्स के इ़लावा) पढ़ या सुन लिये।

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें ईमान की सलामती नसीब फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें बद मज़्हबों की सोह़बत से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सुन्नी उ़-लमा دَامَتْ فُيُوْضُهُم की कुतुब के मुत़ा-लए़ का ज़ौक़ अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

## اَلْحَدِيْثُ الْخَامِسُ बद मज़्हब की तौक़ीर करना कैसा ?

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَنْ اِبْرَاهِيْمَ ابْنِ مَيْسَرَةَ | قَالَ | قَالَ | رَسُوْلُ اللّٰهِ |
| (रिवायत है) हज़रते इब्राहीम बिन मैसरह से | फ़रमाया | कहा (उन्हों ने कि) | अल्लाह के रसूल (ने) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| مَنْ | وَقَّرَ | صَاحِبَ بِدْعَةٍ | فَقَدْ |
| जिस ने | ता'ज़ीमो तौक़ीर की | साहिबे बिद्अ़त (की) | तो तह़क़ीक़ |

| | |
|---|---|
| أَعَانَ | عَلٰى هَدْمِ الْاِسْلَامِ |
| मदद की (उस ने) | इस्लाम के ढाने पर |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते इब्राहीम बिन मैसरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने किसी साहिबे बिद्अ़त (या'नी बे दीन) की ता'ज़ीमो तौक़ीर की तो उस ने इस्लाम के ढाने पर मदद दी। (شعب الایمان، باب فی مباعدۃ الکفار، فصل فی مجانبۃ الفسقۃ، الحدیث ۹۴۶۴، ج ۷، ص ۶۱)

**वज़ाह़त :**

यहां साहिबे बिद्अ़त से मुराद बे दीन शख़्स और तौक़ीर से उस की बिला ज़रूरत ता'ज़ीम मुराद है। इस ह़दीस का मत़लब येह है कि बे दीनों की ता'ज़ीम गोया इस्लाम को वीरान करना है कि हमारी ता'ज़ीम से अ़वाम के दिलों में उन की अ़क़ीदत पैदा होगी, जिस से वोह उन का शिकार बन सकते हैं, जिस त़रह़ मुसल्मान की ता'ज़ीम कारे सवाब है ऐसे ही बे दीन की तौहीन बाइ़से सवाब कि वोह दुश्मने ईमान है। (माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 179)

बे दीन व बद मज़्हब से किस त़रह़ का बरताव करना

चाहिये इस के मु-तअ़ल्लिक़ चन्द अह़ादीसे मुबा-रका में इर्शाद हुवा है कि :

तक़्दीरे इलाही عَزَّوَجَلَّ को झुटलाने वाले इस उम्मत के मजूसी हैं, (येह) अगर बीमार पड़ें तो उन की इ़यादत न करो, अगर मर जाएं तो उन के जनाज़े में शरीक न हो, उन से मुलाक़ात हो तो उन्हें सलाम न करो।

(سنن ابن ماجہ، کتاب السنۃ، باب فی القدر، الحدیث ۹۲، ج۱، ص۷۰)

बेशक अल्लाह तआ़ला ने मेरे लिये अस्ह़ाब व अस्हार पसन्द किये और अ़न्क़रीब एक क़ौम आएगी कि इन्हें बुरा कहेगी और इन की शान घटाएगी तुम उन के पास मत बैठना, न उन के साथ पानी पीना न खाना खाना, न शादी बियाह करना। (کتاب الضعفاء للعقیلی، الحدیث ۱۵۴، ج۱، ص۱۴۴)

उन के जनाज़े की नमाज़ न पढ़ो और न उन के साथ नमाज़ पढ़ो। (العلل المتناھیۃ، کتاب السنۃ وذم البدع، باب ذم الرافضۃ، الحدیث ۲۶۰، ج۱، ص۱۶۸)

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें ईमान की सलामती नसीब फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें बद मज़्हबों की सोह़बत से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें सुन्नी उ़-लमा دَامَتْ فُیُوْضُھُم की कुतुब के मुत़ा-लए़ का ज़ौक़ अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** उम्मते मह़बूब (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## اَلْحَدِيْثُ السَّادِسُ सो शहीदों का सवाब

| | | | |
|---|---|---|---|
| رَسُوْلُ اللّٰهِ | قَالَ | قَالَ | عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ |
| अल्लाह के रसूल (ने) | फ़रमाया | कहा (उन्हों ने कि) | (रिवायत है) हज़रते अबू हुरैरा से |

| | | | |
|---|---|---|---|
| عِنْدَفَسَادِأُمَّتِيْ | بِسُنَّتِيْ | تَمَسَّكَ | مَنْ |
| मेरी उम्मत के फ़साद के वक़्त | मेरी सुन्नत को | मज़्बूती से थामे रखा | जिस ने |

| | | | |
|---|---|---|---|
| شَهِيْدٍ | مِائَةِ | أَجْرُ | فَلَهٗ |
| शहीदों (का) | सो | सवाब | तो उस के लिये (है) |

**बा मुहा-वरा तरजमा :** हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स फ़सादे उम्मत के वक़्त मेरी सुन्नत पर अ़मल करेगा उस को सो शहीदों का सवाब मिलेगा।

(مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام، الحدیث ۱۷۶، ج۱، ص۵۵)

**वज़ाहत :**

फ़सादे उम्मत से सुन्नत छोड़ देना और इस में कमी व कोताही करना मुराद है। और सो शहीद के लफ़्ज़ से इस की त़रफ़ इशारा है कि ऐसे वक़्त में सुन्नत पर अ़मल बड़ी मशक़्क़त और जिद्दो जहद से हो सकेगा लेकिन उस की फ़ज़ीलत और सवाब बहुत ज़ियादा होगा। (اشعۃ اللمعات، ج۱، ص۱۵۵)

शहीद का सवाब कितना है उसे इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से समझिये, चुनान्चे

ह़ज़रते सय्यिदुना मिक़्दाम बिन मा'दी करि-ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शहीद को छ[6] इन्आ़म अ़ता फ़रमाता है, (1) उस के ख़ून का पहला क़त़रा गिरते ही उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है और जन्नत में उसे उस का ठिकाना दिखा देता है, (2) उसे अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ फ़रमाता है, (3) क़ियामत के दिन उसे बड़ी घबराहट से अम्न अ़ता फ़रमाएगा, (4) उस के सर पर वक़ार का ताज रखेगा जिस का याकूत दुन्या और इस की हर चीज़ से बेहतर होगा, (5) उस का हूरों में से 72 हूरों के साथ निकाह़ कराएगा, (6) उस की 70 रिश्तेदारों के ह़क़ में शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाएगा।''

(ابن ماجہ، کتاب الجہاد، باب فضل الشھادۃ فی سبیل اللہ، الحدیث ۲۷۹۹، ج ۳، ص ۳۶۰)

फ़सादे उम्मत के वक़्त सुन्नत को मज़्बूती से थामने वाले के लिये सो शहीदों के सवाब की एक वजह येह भी है कि शहीद तो एक बार तलवार का ज़ख़्म खा कर पार हो जाता है मगर येह बन्दए ख़ुदा उ़म्र भर लोगों के त़ा'ने और ज़बानों के घाव खाता रहता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ातिर सब कुछ बरदाश्त करता है इस का जिहाद जिहादे अक्बर है जैसे इस ज़माने में दाढ़ी रखना और सूद से बचना वग़ैरा।

(माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 173)

## फ़िक्रे मदीना :

क्या आज आप ने ह़त्तल इम्कान (प्लास्टिक की नहीं) खजूरी वग़ैरा की चटाई पर या न होने की सूरत में ज़मीन पर सोते वक़्त सिरहाने (और सफ़र में भी) सुन्नत के मुत़ाबिक़ आईना, सुरमा, कंघा, सूई धागा, मिस्वाक, तेल की शीशी और क़ैंची साथ रखी ? नीज़ फ़राग़त के बा'द बिस्तर और लिबास तह कर के रखा ?

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सुन्नतों का पैकर बना । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

# اَلْحَدِيْثُ السَّابِعُ अच्छे त़रीक़े की तरग़ीब

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَنْ جَرِيْرٍ | قَالَ | قَالَ | رَسُوْلُ اللّٰهُ |
| (रिवायत है) ह़ज़रते जरीर से | कहा (उन्हों ने) | फ़रमाया | अल्लाह के रसूल (ने) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| مَنْ | سَنَّ | فِى الْاِسْلَام | سُنَّةً حَسَنَةً |
| जिस ने | जारी किया | इस्लाम में | अच्छा त़रीक़ा |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| فَلَهٗ | أَجْرُهَا | وَ | أَجْرُ | مَنْ |
| तो उस के लिये (होगा) | उस (त़रीक़े) का सवाब | और | सवाब | (उन का) जिन्हों ने |

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَمِلَ | بِهَا | بَعْدَهٗ | مِنْ غَيْر |
| अ़मल किया | उस (त़रीक़े) पर | उस के बा'द | बिग़ैर इस के |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| أَنْ يَّنْقُصَ | مِنْ أُجُوْرِهِمْ | شَىْءٌ | وَ | مَنْ |
| कि कमी हो | उन के सवाब से | कुछ भी | और | जिस ने |

| | | | |
|---|---|---|---|
| سَنَّ | فِى الْاِسْلَام | سُنَّةً سَيِّئَةً | كَانَ |
| जारी किया | इस्लाम में | बुरा त़रीक़ा | होगा |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| عَلَيْهِ | وِزْرُهَا | وَ | وِزْرُ | مَنْ | عَمِلَ |
| उस पर | उस (त़रीक़े) का गुनाह | और | गुनाह (उन का) | जिन्हों ने | अ़मल किया |

| | | | |
|---|---|---|---|
| بِهَا | مِنْ بَعْدِهٖ | مِنْ غَيْر | أَنْ يَّنْقُصَ |
| उस (त़रीक़े) पर | उस के बा'द | बिग़ैर इस के | कि कमी हो |

| | |
|---|---|
| مِنْ أَوْزَارِهِمْ | شَىْءٌ |
| उन के गुनाहों से | कुछ भी |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते जरीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो इस्लाम में किसी अच्छे त़रीक़े को राइज करेगा उस को उस त़रीक़े को राइज करने का भी सवाब मिलेगा और उन लोगों के अ़मल करने का भी जो उस के बा'द उस त़रीक़े पर अ़मल करते रहेंगे और अ़मल करने वालों के सवाब में कोई कमी भी न होगी। जो मज़्हबे इस्लाम में किसी बुरे त़रीक़े को राइज करेगा तो उस शख़्स पर उस त़रीक़े को राइज करने का भी गुनाह होगा और उन लोगों के अ़मल करने का भी जो उस के बा'द उस त़रीक़े पर अ़मल करते रहेंगे और अ़मल करने वालों के गुनाह में कोई कमी भी न होगी। (صحیح مسلم، کتاب الزکوۃ، باب الحث علی الصدقۃ، الحدیث ۱۰۱۷، ص ۵۰۸)

## वज़ाह़त :

मा'लूम हुवा कि अच्छा अ़मल जारी करने वाला तमाम अ़मल करने वालों के बराबर अज्र पाएगा।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 196)

मिरआतुल मनाजीह़ में है : जिन लोगों ने इ़ल्मे फ़िक़्ह़, फ़न्ने ह़दीस, मीलाद शरीफ़, उ़र्से बुज़ुर्गाने दीन, ज़िक्रे ख़ैर की मजालिस, इस्लामी मद्रसे (और) त़रीक़त के सिल्सिले ईजाद किये उन्हें क़ियामत तक सवाब मिलता रहेगा। (اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ)

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 196)

## फ़िक्रे मदीना :

क्या आज आप ने दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों (म-सलन इन्फ़िरादी कोशिश, दर्स व बयान, मद्र-सतुल मदीना बालिग़ान वग़ैरा) पर कम अज़् कम दो घन्टे सर्फ़ किये ?

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें अपने अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

**اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين** صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

## اَلْحَدِيْثُ الثَّامِن बिद्अ़त किसे कहते हैं ?

| عَنْ جَابِرٍ | قَالَ | قَالَ | رَسُوْلُ اللّٰهِ |
|---|---|---|---|
| (रिवायत है) ह़ज़रते जाबिर से | कहा (उन्हों ने कि) | फ़रमाया | अल्लाह के रसूल (ने) |

| أَمَّا بَعْدُ | فَإِنَّ | خَيْرَ الْحَدِيْثِ | كِتَابُ | اللّٰهِ |
|---|---|---|---|---|
| बा'द (ह़म्दे इलाही के) | बेशक | बेहतर कलाम (है) | किताब | अल्लाह (की) |

| وَخَيْرَ الْهُدٰى | هُدٰى | مُحَمَّدٍ (صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہٖ وسلم) | وَاِنَّ شَرَّ الْاُمُوْر |
|---|---|---|---|
| और बेहतरीन रास्ता | रास्ता | मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का | और बद तरीन काम |

| مُحْدَثَاتُهَا | وَكُلُّ | بِدْعَةٍ | ضَلَالَةٌ |
|---|---|---|---|
| नया काम है | और हर | बिद्अ़त | गुमराही (है) |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (ख़ुत़्बे के बा'द) फ़रमाया : बा'दे ह़म्दे इलाही के, बेशक सब से बेहतर कलाम किताबुल्लाह है और बेहतरीन रास्ता मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का रास्ता है और बद तरीन चीज़ों में वोह है जिसे नया निकाला गया और हर बिद्अ़त गुमराही है।

(صحیح ابن حبان، باب الاعتصام بالسنہ...الخ، ذکر الاخبار عما یجب علی المرء من تحری...الخ، الحدیث ۱۰، ج ۱، ص ۱۰۶)

## वज़ाह़त :

कलामे इलाही عَزَّوَجَلَّ की बर-तरी तमाम कलामों पर ऐसी ही है जैसी रब तआ़ला की अपनी मख़्लूक़ पर। और यक़ीनन नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरत बेहतरीन सीरत है जिस की पैरवी करना बाइसे नजात है। बद तरीन चीज़ों से मुराद वोह अ़क़ाइद और आ'माल हैं जो ह़ुज़ूरे अकरम

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द दीन में पैदा किये जाएं। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 146)

बिद्अ़त का लु-ग़वी मा'ना है नई चीज़ और शर-ई तौ़र पर हर वोह नई चीज़ जो हुज़ूरे पाक साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़मानए मुबा-रका के बा'द ईजाद हुई बिद्अ़त है। (مرقاۃ المفاتیح، ج۱، ص۳۶۸)

बिद्अ़त की ता'रीफ़ में "ज़मानए न-बवी की क़ैद" लगाई गई है, चुनान्चे ख़ु-लफ़ाए राशिदीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم के पाकीज़ा दौर में ईजाद शुदा नए काम को भी बिद्अ़त ही कहा जाएगा। मगर दर ह़क़ीक़त येह नए काम भी सुन्नत में दाख़िल हैं। (ماخوذ از اشعۃ اللمعات، ج۱، ص۱۳۵) क्यूं कि सरवरे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मेरी सुन्नत और मेरे ख़ु-लफ़ा की सुन्नत को मज़्बूती से पकड़े रहो।" (سنن ابن ماجہ، مقدمہ، الحدیث ۴۲، ج۱، ص۳۱)

## बिद्अ़त की ( उसूले शर-अ़ के ए'तिबार से ) दो अक़्साम हैं :

**(1) बिद्अ़ते ह़-सना :** हर वोह नया काम जो उसूले शर-अ़ (या'नी क़ुरआन व ह़दीस और इज्माअ़) के मुवाफ़िक़ हो मुख़ालिफ़ न हो।

**(2) बिद्अ़ते ज़लाला :** जो नया काम उसूले शर-अ़ के मुख़ालिफ़ हो।

इस ह़दीस में كُلُّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ से मुराद दूसरी क़िस्म है या'नी हर वोह नया काम जो क़ुरआने पाक, ह़दीस शरीफ़, आसारे सह़ाबा या इज्माए उम्मत के ख़िलाफ़ हो वोह बिद्अ़ते सय्यिआ और गुमराही है और जो नया अच्छा काम इन में से किसी के मुख़ालिफ़ न हो तो वोह काम मज़्मूम नहीं है जैसे ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने तरावीह़ की जमाअ़त के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाया نِعْمَتِ الْبِدْعَةُ هٰذِهٖ या'नी येह क्या ही अच्छी बिद्अ़त है।

फिर **बिद्अ़त** की मज़ीद पांच अक़्साम हैं :

(1) वाजिबा (2) मुस्तह़ब्बा (3) मुबाह़ा (4) मक्रूहा (5) मुह़र्रमा

## (1) वाजिबा :

जैसे इल्मे नह्व व सर्फ़ का सीखना सिखाना कि इसी के ज़रीए़ आयात व अह़ादीस के मा'ना की सह़ीह़ पहचान ह़ासिल होती है (अगर्चे येह उ़लूम मुरव्वजा अन्दाज़ में अ़हदे रिसालत में मौजूद न थे), इसी त़रह़ दूसरी बहुत सी वोह चीज़ें और उ़लूम जिन पर दीन व मिल्लत की ह़िफ़ाज़त मौक़ूफ़ है। इसी त़रह़ बात़िल फ़िर्क़ों का रद कि इन के अ़क़ाइदे बात़िला से शरीअ़त की ह़िफ़ाज़त फ़र्ज़ें किफ़ाया है।

## (2) मुस्तह़ब्बा :

जैसे सराओं (मुसाफ़िर ख़ानों) की ता'मीर ताकि मुसाफ़िर वहां आराम से रात बसर कर सकें, दीनी मदारिस का क़ियाम ताकि इल्म की रोशनी हर सू फैले, इज्तिमाए़ मीलादुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और बुज़ुर्गाने दीन के उ़र्स की मह़ाफ़िल क़ाइम करना। इसी त़रह़ मुसल्मानों की ख़ैर ख़्वाही का हर वोह नया अन्दाज़ जो पहले ज़माने (या'नी रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم के ज़माने) में मौजूद न था।

## (3) मुबाह़ा :

जैसे खाने पीने की लज़ीज़ चीज़ें कसरत से इस्ति'माल करना, वसीअ़ मकान में रहना, अच्छा लिबास पहनना जब कि येह चीज़ें ह़लाल व जाइज़ ज़राएअ़ से ह़ासिल हुई हों नीज़ तकब्बुर और

एक दूसरे पर फ़ख़्र का बाइ़स न बन रही हों। इसी त़रह़ आटा छान कर इस्ति'माल करना अगर्चे अ़हदे रिसालत में अन-छने आटे की रोटी इस्ति'माल होती थी।

**(4) मक्रूहा :**

वोह काम जिस में इस्राफ़ हो जैसे शाफ़िइ़य्यों के नज़्दीक क़ुरआने पाक की जिल्द और ग़िलाफ़ वग़ैरा की आराइ़श व ज़ैबाइ़श और मसाजिद को नक़्शो निगार से मुज़य्यन करना। ह़नफ़िय्यों के नज़्दीक येह सब काम बिला कराहत जाइ़ज़ हैं।

**(5) मुह़र्रमा :**

जैसे अहले बिद्अ़त के मज़ाहिबे बात़िला जो कि किताब व सुन्नत (और इज्माअ़) के मुख़ालिफ़ हैं।

(ماخوذ از اشعۃ اللمعات، ج۱، ص۱۳۵ و مرقاۃ المفاتیح، ج۱، ص۳۶۸)

बा'ज़ लोग इस ह़दीस के मा'ना येह करते हैं कि जो काम हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द ईजाद हो वोह बिद्अ़त है और हर बिद्अ़त गुमराही, येह मा'ना बिल्कुल फ़ासिद हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 147) शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रसाइल के मज्मूए ''नमाज़ के अह़काम'' से बिद्अ़ते ह़-सना की बारह मिसालें मुला-ह़ज़ा हों : (1) क़ुरआने पाक पर नुक़्ते और ए'राब ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ ने 95 हि. में लगवाए। (2) उसी ने ख़त्मे आयात पर अ़लामात के त़ौर पर नुक़्ते लगवाए। (3) क़ुरआने पाक की छपाई (4) मस्जिद के वस्त में इमाम के खड़े रहने के लिये त़ाक़ नुमा मेह़राब पहले न थी वलीद मरवानी के दौर में सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल

अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ईजाद की, आज कोई मस्जिद इस से ख़ाली नहीं। (5) छ कलिमे। (6) इ़ल्मे सर्फ़ व नहू। (7) इ़ल्मे ह़दीस और अह़ादीस की अक़्साम। (8) दर्से निज़ामी। (9) ज़बान से नमाज़ की निय्यत। (10) हवाई जहाज़ के ज़रीए़ सफ़रे ह़ज। (11) शरीअ़त (ह़-नफ़ी, शाफ़ेई़, मालिकी, ह़म्बली) व त़रीक़त (क़ादिरी, चिश्ती, नक़्शबन्दी, सुहर वर्दी) के चार सिल्सिले। (12) जदीद साइन्सी हथियारों के ज़रीए़ जिहाद। (नमाज़ के अह़काम, स. 54)

## फ़िक्रे मदीना :

क्या आज आप ने यक्सूई के साथ कम अज़ कम 12 मिनट फ़िक्रे मदीना (या'नी अपने आ'माल का मुह़ा-सबा) करते हुए जिन जिन म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल हुवा कार्ड में उन की ख़ाना पुरी फ़रमाई ? (72 म-दनी इन्आ़मात, स. 6)

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें इ़ल्म का नूर अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## اَلْحَدِيْثُ التَّاسِعُ तक्लीफ़ और गुनाहों का मिटना

| | | |
|---|---|---|
| قَالَ | عَنِ النَّبِيِّ | عَنْ أَبِيْ سَعِيْدِ نِ الْخُدْرِيِّ |
| फ़रमाया | नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से रिवायत करते हैं कि | ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी |

| | | | |
|---|---|---|---|
| مَا يُصِيْبُ | الْمُسْلِمَ | مِنْ نَّصَبٍ | وَلَا وَصَبٍ |
| नहीं पहुंचती है | मुसल्मान (को) | कोई तक्लीफ़ | और न कोई बीमारी |

| | | | |
|---|---|---|---|
| وَلَا هَمٍّ | وَلَا حُزْنٍ | وَلَآ أَذًى | وَلَا غَمٍّ |
| और न कोई फ़िक्र | और न कोई मलाल | और न कोई अज़िय्यत | और न कोई ग़म |

| | | | |
|---|---|---|---|
| حَتّٰى الشَّوْكَةِ | يُشَاكُهَا | اِلَّا | كَفَّرَ |
| यहां तक कि कांटा | जो चुभता है उसे | मगर | मिटाता है |

| | | | |
|---|---|---|---|
| اللّٰهُ | بِهَا | مِنْ | خَطَايَاهُ |
| अल्लाह | उन (मुसीबतों) के सबब | से | उस (मुसल्मान) की ख़ताएं |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुसल्मान को कोई तक्लीफ़, फ़िक्र, बीमारी, मलाल, अज़िय्यत और कोई ग़म नहीं पहुंचता यहां तक कि कांटा जो उसे चुभे मगर अल्लाह तआ़ला उन के सबब उस के गुनाहों को मिटा देता है।

(صحیح البخاری، کتاب المرضیٰ، باب ماجاء فی کفارۃ المرض، الحدیث ۵۶۴۲، ج۴، ص۳)

### वज़ाह़त :

इस ह़दीस में मुसल्मानों के लिये अ़ज़ीम बिशारत है कि सब्र करने वाले के लिये थोड़ी सी तक्लीफ़ भी उस के गुनाहों का

कफ़्फ़ारा है । तकालीफ़ और बीमारी वग़ैरा की फ़ज़ीलत पर चन्द मज़ीद अहादीसे मुबा-रका मुला-हज़ा हों :

(1) हज़रते सय्यि-दतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि सरवरे कौनैन, हम ग़रीबों के दिल के चैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब मोमिन बीमार होता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे गुनाहों से ऐसा पाक कर देता है जैसे भट्टी लोहे के ज़ंग को साफ़ कर देती है ।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر، الحدیث ۴۲، ج ۴، ص ۱۴۶)

(2) हज़रते सय्यिदुना **असद बिन कुर्ज़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि रहमते आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मरीज़ के गुनाह इस तरह झड़ते हैं जैसे दरख़्त के पत्ते झड़ते हैं ।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر، الحدیث ۵۶، ج ۴، ص ۱۴۸)

(3) हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मोमिन पर तअ्ज्जुब है कि वोह बीमारी से डरता है, अगर वोह जान लेता कि बीमारी में उस के लिये क्या है ? तो सारी ज़िन्दगी बीमार रहना पसन्द करता ।'' फिर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना सर आस्मान की तरफ़ उठाया और मुस्कुराने लगे । अ़र्ज़ किया गया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप ने आस्मान की तरफ़ सर उठा कर तबस्सुम क्यूं फ़रमाया ?'' इर्शाद फ़रमाया, ''मैं दो फ़िरिश्तों पर हैरान हूं कि वोह दोनों एक बन्दे को एक मस्जिद में तलाश कर रहे थे जिस में वोह नमाज़ पढ़ा करता था, जब उन्हों ने उसे न पाया तो लौट गए और अ़र्ज़ किया, ''या रब عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरे फ़ुलां बन्दे के दिन और रात में

किये हुए आ'माल लिखते थे फिर हम ने देखा कि तूने उसे आज़माइश में मुब्तला फ़रमा दिया।" तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है कि "मेरा बन्दा दिन और रात में जो अ़मल किया करता था उस के लिये वोह अ़मल लिखो और उस के अज्र में कमी न करो, जब तक वोह मेरी त़रफ़ से आज़माइश में है उस का सवाब मेरे ज़िम्मए करम पर है और जो आ'माल वोह किया करता था उस के लिये उन का भी सवाब है।"

(المعجم الاوسط، الحدیث ۲۳۱۷، ج ۲، ص ۱۱)

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّ وَجَلَّ ! हमें मसाइबो आलाम पर सब्र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! हमारी बिला हि़साब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِین بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

## اَلْحَدِيْثُ الْعَاشِرُ — बुख़ार की ब-र-कतें

| | | |
|---|---|---|
| عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ | قَالَ | ذُكِرَتِ |
| (रिवायत है) ह़ज़रते अबू हुरैरा से | कहा (उन्हों ने) | ज़िक्र किया गया |

| | | |
|---|---|---|
| اَلْحُمَّى | عِنْدَرَسُوْلِ اللّٰهِ | فَسَبَّهَا |
| बुख़ार का | अल्लाह के रसूल के सामने | तो बुरा कहा इस (बुख़ार) को |

| | | | |
|---|---|---|---|
| رَجُلٌ | فَقَالَ | اَلنَّبِيُّ | لَاتَسُبَّهَا |
| एक शख़्स (ने) | तो फ़रमाया | नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने | न बुरा कहो इस (बुख़ार) को |

| | | | |
|---|---|---|---|
| فَإِنَّهَا | تَنْفِي | اَلذُّنُوْبَ | كَمَا |
| पस बेशक येह (बुख़ार) | दूर करता है | गुनाहों (को) | जैसे |

| | | |
|---|---|---|
| تَنْفِي | اَلنَّارُ | خَبَثَ الْحَدِيْدِ |
| दूर करती है | आग | लोहे के मैल (को) |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुज़ूर बुख़ार का ज़िक्र किया गया तो एक शख़्स ने बुख़ार को बुरा कहा तो नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बुख़ार को बुरा न कहो इस लिये कि येह तो गुनाहों से इस त़रह़ पाक कर देता है जैसे आग लोहे के मैल को दूर कर देती है।

(سنن ابن ماجہ، کتاب الطب، باب الحمی، الحدیث ۳۴۶۹، ج ۴، ص ۱۰۴)

**वज़ाह़त :**

इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की

भेजी हुई बीमारियों को बुरा कहना सख़्त जुर्म है।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 2, स. 430)

दीगर बीमारियां जिस्म के एक या दो हिस्सों तक महदूद रहती हैं जब कि बुख़ार सर से पाउं तक हर रग में असर करता है, लिहाज़ा येह सारे जिस्म की ख़ताओं और गुनाहों को मुआफ़ कराएगा। (माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह, जि. 2, स. 413)

एक और हदीस में है कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने रहमते आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, "जो मुसल्मान बुख़ार और दर्दे सर में मुब्तला हुवा और उस के सर पर उहुद पहाड़ से ज़ियादा गुनाह हों जब येह उसे छोड़ते हैं तो उस के सर पर राई के दाना बराबर गुनाह नहीं होते।" (مسند احمد بن حنبل، مسند ابودرداء، الحدیث ۲۱۷۹۵، ج۸، ص۱۷۲)

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरफ़ूअन मरवी है कि बेशक अल्लाह तआला मुसल्मान के एक रात बुख़ार में मुब्तला होने को उस के तमाम गुनाहों का कफ़्फ़ारा बना देता है।

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر ...الخ، الحدیث ۷۸، ج۴، ص۱۵۳)

और हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अर्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! बुख़ार का सवाब क्या है ?" इर्शाद फ़रमाया : "जब तक बुख़ार में मुब्तला शख़्स के क़दम में दर्द रहता है और उस की रग फड़क्ती रहती है उसे इस के इवज़ नेकियां मिलती रहती हैं।" तो हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दुआ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से ऐसे बुख़ार का सुवाल करता हूं जो मुझे तेरी राह में जिहाद करने, तेरे घर और तेरे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

की मस्जिद शरीफ़ की त़रफ़ जाने से न रोके।" इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को रोज़ाना शाम के वक़्त बुख़ार हो जाया करता था।

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر ...الخ، الحدیث۸۲، ج۴، ص۱۵۳)

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ की मायानाज़ तालीफ़ फ़ैज़ाने सुन्नत से

## "*या नबी*" के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से बुख़ार के 5 म-दनी इलाज

(1) **لَا یَرَوۡنَ فِیۡہَا شَمۡسًا وَّ لَا زَمۡہَرِیۡرًا ۰** (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : न उस में धूप देखेंगे न ठिठर (या'नी सर्दी) (پ۲۹ الدّھر ۱۳) येह आयते करीमा सात बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **बुख़ार** की शिद्दत में नुमायां कमी मह़सूस होगी और मरीज़ सुकून मह़सूस करेगा। (तरजमा पढ़ने की ह़ाजत नहीं)

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं, **सू-रतुल फ़ातिह़ा 40** बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के बुख़ार वाले के मुंह पर छींटे मारिये اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **बुख़ार** चला जाएगा।

(3) सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को **बुख़ार** था तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने येह दुआ़ पढ़ कर दम किया था :

بِسۡمِ اللّٰہِ اَرۡقِیۡکَ مِنۡ کُلِّ شَیۡءٍ یُّؤۡذِکَ وَمِنۡ شَرِّ کُلِّ
نَفۡسٍ اَوۡ عَیۡنٍ حَاسِدٍ ط اَللّٰہُ یَشۡفِیۡکَ بِسۡمِ اللّٰہِ اَرۡقِیۡکَ

(तरजमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से आप पर दम करता हूं हर उस चीज़ के लिये जो आप को ईज़ा देती है और हर नफ़्स के शर और ह़सद करने वालों की बुरी नज़र से । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को शिफ़ा अ़ता फ़रमाए । मैं आप पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से दम करता हूं ।)

(مسلم ص٢٠٢ ١الحديث ٢١٨٦)

बुख़ार के मरीज़ को सिर्फ़ अ़-रबी में दुआ़ (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कर दीजिये ।

(4) **बुख़ार** वाला ब कसरत بِسْمِ اللهِ الْكَبِيْرِ पढ़ता रहे ।

(5) ह़दीसे पाक में है, जब तुम में से किसी को बुख़ार आ जाए तो उस पर तीन दिन तक सुब्ह़ के वक़्त ठन्डे पानी के छींटे मारे जाएं ।

(اَلْمُسْتَدْرَك لِلحاكِم ج ٤ ص ٢٢٣ الحديث ٧٤٣٨)

(फ़ैज़ाने सुन्नत, (जिल्द अव्वल) बाब : फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह, स. 64)

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें बुख़ार बल्कि हर बीमारी में उस के फ़ज़ाइल पेशे नज़र रखते हुए सब्र की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बिला ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

## اَلْحَدِيْثُ الْحَادِیْ عَشَرَ सब्र, मुसीबत और मर्तबए कमाल

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ خَالِدِنِ السُّلَمِیِّ | عَنْ أَبِيْهِ | عَنْ جَدِّهٖ | قَالَ |
| मुहम्मद बिन ख़ालिद सु-लमी से (रिवायत है) | (वोह) अपने वालिद से | (वोह) अपने दादा से (रिवायत करते हैं) | फ़रमाया |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| رَسُوْلُ اللّٰهِ | اِنَّ | الْعَبْدَ | اِذَا | سَبَقَتْ |
| अल्लाह के रसूल (ने) | बेशक | बन्दा | जब | मुक़द्दर होती है |

| | | | |
|---|---|---|---|
| لَهٗ | مِنَ اللّٰهِ | مَنْزِلَةٌ | لَمْ يَبْلُغْهَا |
| उस (बन्दे) के लिये | अल्लाह की त़रफ़ से | ऐसी मन्ज़िलत | जिस त़क वोह नहीं पहुंच सकता |

| | | | |
|---|---|---|---|
| بِعَمَلِهٖ | اِبْتَلَاهُ | اللّٰهُ | فِیْ جَسَدِهٖ |
| अपने अ़मल से | तो आज़माइश में मुब्तला करता है उस (बन्दे को) | अल्लाह | उस (बन्दे) के जिस्म में |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| أَوْ | فِیْ مَالِهٖ | أَوْفِیْ وَلَدِهٖ | ثُمَّ | صَبَّرَهٗ |
| या | उस के माल में | या उस की औलाद में | फिर | सब्र अ़त़ा फ़रमाता है उसे |

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَلٰی ذٰلِكَ | حَتّٰی | يُبَلِّغُهُ | الْمَنْزِلَةَ |
| उस (आज़माइश) पर | यहां तक कि | पहुंचा देता है (अल्लाह) उस (बन्दे को) | उस मर्तबे तक |

| | | | |
|---|---|---|---|
| الَّتِیْ | سَبَقَتْ | لَهٗ | مِنَ اللّٰهِ |
| जो | मुक़द्दर हो चुका है | उस (बन्दे) के लिये | अल्लाह की त़रफ़ से |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रत मुह़म्मद बिन ख़ालिद सु-लमी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا अपने वालिदे मोह़तरम के वासित़े से अपने दादा से रिवायत करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बन्दे के लिये इल्मे इलाही में जब कोई मर्तबए कमाल मुक़द्दर होता है और वोह अपने अ़मल से उस मर्तबे को नहीं पहुंच

सकता तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उस के जिस्म या माल या औलाद की आफ़त में मुब्तला कर देता है फिर उस पर सब्र अ़ता फ़रमाता है यहां तक कि उसे उस मर्तबे तक पहुंचा देता है जो उस के लिये इल्मे इलाही में मुक़द्दर हो चुका है।

(مشکوۃ المصابیح، کتاب الجنائز، باب عیادۃ المریض، الحدیث ۱۵۶۸، ج۱، ص۳۰۰)

## वज़ाहत :

### इस ह़दीस से चन्द म-दनी फूल ह़ासिल हुए :

(1) बन्दा बला व मुसीबत पर सब्र करने से उस मर्तबे तक पहुंच जाता है जिस तक त़ाअ़त व इ़बादत से नहीं पहुंच सकता।

(اشعۃ اللمعات، ج۱، ص۶۸۹)

(2) मुसीबत पर सब्र अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ से मिलता है न कि अपनी हिम्मत व जुरअत से और सब्र अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बहुत बड़ी ने'मत है।

(3) द-रजात आ'माल से मिलते हैं और बख़्शिश रब عَزَّوَجَلَّ के करम से। उ़-लमाए किराम फ़रमाते हैं कि जन्नत में दाख़िला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से होगा मगर वहां के द-रजात मोमिन के आ'माल से (मिलेंगे), मगर कभी दूसरे के अ़मल भी काम आ जाते हैं म-सलन साबिर मोमिन की छोटी औलाद अपने मां बाप के साथ ही रहेगी अगर्चे कुछ अ़मल न कर सकी, फ़रमाने रब्बे लम यज़ल है : اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हम ने उन की औलाद उन से मिला दी। (پ:۲۷، الطور:۲۱)

(4) इन्सानों के द-रजात वग़ैरा पहले से ही मुक़र्रर हो चुके हैं जहां (इन्सान) ला मुह़ाला पहुंचता है, जिस का ज़ुहूर क़ियामत के दिन होगा। (माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 423)

## बीस ग़म बीस मनाज़िल :

मस्नवी शरीफ़ में है : एक औ़रत के बीस बेटे थे क़ज़ाए इलाही से हर साल एक एक बेटा जवानी की उ़म्र में फ़ौत होना शुरूअ़ हुवा, और यूं बीसों का इन्तिक़ाल हो गया, मगर वोह औ़रत साबिरा रही । एक रात ख़्वाब में उस औ़रत ने ख़ुद को निहायत ह़सीन बाग़ में देखा जिस में बे शुमार मह़ल्लात थे, हर एक मह़ल पर उस के मालिक का नाम दर्ज था । एक निहायत नफ़ीस मह़ल पर अपना नाम देख कर अन्दर दाख़िल हुई तो अपने बीसों बेटों को वहां ऐ़शो आराम में पाया । मां को देख कर एक बेटा बोला, मां ! हम अपने रब के पास निहायत आराम से हैं । पुकारने वाले ने पुकारा कि ऐ मोमिना ! तेरा मक़ाम येह है मगर तेरे आ'माल तुझे यहां तक नहीं पहुंचा सकते थे इस लिये तुझे बीस ग़म दिये गए येह बीस ग़म इस मन्ज़िल की बीस सीढ़ियां थीं जिन को तूने रब तआ़ला के करम से तै़ कर लिया अब तेरे लिये ख़ुशी ही ख़ुशी है ।

(रसाइले नईमिया, स. 440)

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें आ़फ़िय्यत अ़त़ा फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

## اَلْحَدِيْثُ الثَّانِى عَشَرَ — शहादतें

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَنْ جَابِرِ بْنِ عَتِيْكٍ | قَالَ | قَالَ | رَسُوْلُ اللّٰهِ |
| ह़ज़रते जाबिर बिन अ़तीक से (रिवायत है) | | कहा (उन्हों ने कि) | फ़रमाया | अल्लाह के रसूल (ने) |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| اَلشَّهَادَةُ | سَبْعٌ | سِوَى | اَلْقَتْلِ | فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ |
| शहादतें | सात (हैं) | इ़लावा | क़त्ल (के) | अल्लाह की राह में |

| | | | |
|---|---|---|---|
| اَلْمَطْعُوْنُ | شَهِيْدٌ | وَالْغَرِيْقُ | شَهِيْدٌ |
| ता़ऊ़न जदा (हो कर मरे) | शहीद (है) | और डूब कर मरे | शहीद (है) |

| | |
|---|---|
| وَصَاحِبُ ذَاتِ الْجَنْبِ | شَهِيْدٌ |
| और जो ज़ातिल जम्ब में (मरे) | शहीद (है) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| وَالْمَبْطُوْنُ | شَهِيْدٌ | وَصَاحِبُ الْحَرِيْقِ | شَهِيْدٌ |
| और पेट की बीमारी में (मरे) | शहीद (है) | और आग में जल कर मरे | शहीद (है) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| وَالَّذِىْ | يَمُوْتُ | تَحْتَ الْهَدَمِ | شَهِيْدٌ |
| और जो | मरता है (मरे) | इ़मारत के नीचे दब कर | शहीद (है) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| اَلْمَرْأَةُ | تَمُوْتُ | بِجُمْعٍ | شَهِيْدٌ |
| (जो) औ़रत | फ़ौत हो | विलादत में | शहीद (है) |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते जाबिर बिन अ़तीक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में क़त्ल के इ़लावा सात शहादतें और हैं। जो ता़ऊ़न में मरे शहीद है, जो डूब कर

मरे शहीद है, जो ज़ातिल जम्ब में मरे शहीद है, जो पेट की बीमारी में मरे शहीद है, जो आग में जल जाए शहीद है, जो इमारत के नीचे दब कर मरे शहीद है और जो औरत विलादत में मरे शहीद है।

(مشکوۃ المصابیح، کتاب الجنائز، باب عیادۃ المریض، الحدیث ۱۵۶۱، ج ۱، ص ۲۹۹)

## वज़ाहत :

यहां शहादत से शहादते हुक्मी मुराद है कि इस में शहादत का सवाब तो मिलता है मगर शहीद के शर-ई अहकाम जारी नहीं होते।

ज़ातिल जम्ब उस बीमारी को कहते हैं जिस में पस्लियों पर फुन्सियां नुमूदार होती हैं, पस्लियों में दर्द और बुख़ार होता है अक्सर खांसी भी उठती है, विलादत में मर जाने वाली औरत से मुराद वोह औरत है जो हामिला फ़ौत हो जाए या बच्चे की पैदाइश के वक़्त या विलादत के बा'द चालीस दिन के अन्दर फ़ौत हो, बा'ज़ उ-लमा ने फ़रमाया कि इस से मुराद कंवारी औरत है जो बिग़ैर शादी के फ़ौत हो जाए।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 2, स. 420)

सदरुश्शरीअह बदरुत्तरीक़ह मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं कि येह (या'नी शहीदे हुक्मी) सात से भी ज़ाइद हैं, जिन में से बा'ज़ येह हैं :

(1) बुख़ार में मरा। (2) माल या (3) जान या (4) अहल या (5) किसी हक़ के बचाने में क़त्ल किया गया। (6) किसी दरिन्दे ने फाड़ खाया। (7) किसी मूज़ी जानवर के काटने से मरा। (8) इल्मे

दीन की त़लब में मरा। (9) जो बा त़हारत सोया और मर गया। (10) जो सच्चे दिल से येह सुवाल करे कि अल्लाह की राह में क़त्ल किया जाऊं। (11) जो नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर सो बार दुरूद शरीफ़ पढ़े। (बहारे शरीअ़त, शहीद का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 208)

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें गुम्बदे ख़ज़्रा के साए में मह़बूबे करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जल्वों में शहादत की मौत नसीब फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** उम्मते मह़बूब (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

## اَلْحَدِيْثُ الثَّالِثُ عَشَرَ इयादत की फ़ज़ीलत

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَنْ عَلِيٍّ | قَالَ | سَمِعْتُ | رَسُوْلَ اللّٰهِ |
| ह़ज़रते अ़ली से (रिवायत है) | कहा (उन्हों ने) | मैं ने सुना | अल्लाह के रसूल (को) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| يَقُوْلُ | مَا | مِنْ مُّسْلِمٍ | يَّعُوْدُ مُسْلِماً |
| फ़रमाते हुए | नहीं है | कोई मुसल्मान (जो) | इयादत करता है किसी मुस्लिम की |

| | | | |
|---|---|---|---|
| غُدْوَةً | اِلَّا | صَلّٰى | عَلَيْهِ |
| सुब्ह़ के वक़्त | मगर | मग़्फ़िरत की दुआ़ करते हैं | उस के लिये |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| سَبْعُوْنَ اَلْفِ | مَلَكٍ | حَتّٰى | يُمْسِيَ | وَاِنْ |
| सत्तर हज़ार | फ़िरिश्ते | यहां तक कि | वोह शाम करे | और नहीं |

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَادَهٗ | عَشِيَّةً | اِلَّا | صَلّٰى |
| इयादत करता (मरीज़ की) | शाम के वक़्त | मगर | मग़्फ़िरत की दुआ़ करते हैं |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| عَلَيْهِ | سَبْعُوْنَ اَلْفِ | مَلَكٍ | حَتّٰى | يُصْبِحَ |
| उस के लिये | सत्तर हज़ार | फ़िरिश्ते | यहां तक कि | वोह सुब्ह़ करे |

| | | | |
|---|---|---|---|
| وَكَانَ | لَهٗ | خَرِيْفٌ | فِى الْجَنَّةِ |
| और होगा | उस (मुसल्मान) के लिये | एक बाग़ | जन्नत में |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है उन्हों ने कहा, मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि जब कोई मुसल्मान अपने मुसल्मान भाई की सुब्ह़ के वक़्त इयादत करता है तो शाम तक सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस के लिये रह़मत व मग़्फ़िरत की दुआ़ करते हैं और जो शाम के वक़्त इयादत करता है तो सुब्ह़ तक सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस के लिये रह़मत व

मग़्फ़िरत की दुआ करते हैं और उस के लिये जन्नत में एक बाग़ है।

(مشکوۃ المصابیح، کتاب الجنائز، باب عیادۃ المریض، الحدیث ۱۵۵۰، ج ۱، ص ۲۹۷)

## वज़ाहत :

यहां सुब्ह से मुराद दो पहर से पहले का वक़्त है और शाम से बा'दे दो पहर या रात के शुरूअ होने का वक़्त मुराद है।

(مرقاۃ المفاتیح، ج ۴، ص ۲۹)

जब कोई मुसल्मान बीमार हो जाए तो हमें उस की इयादत ज़रूर करनी चाहिये कि इस नेकी में मशक़्क़त कम है मगर येह ला ता'दाद फ़िरिश्तों की दुआ मिलने का ज़रीआ है और जन्नत मिलने का सबब भी। (माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह, जि. 2, स. 415) इयादत के मज़ीद फ़ज़ाइल मुला-हज़ा हों :

**(1) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि : "जो शख़्स किसी मरीज़ की इयादत करता है तो एक मुनादी आस्मान से निदा करता है, "**तू ख़ुश हो** कि तेरा येह चलना मुबारक है और तूने जन्नत में अपना ठिकाना बना लिया है।" (سنن ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی ثواب من عاد مریضاً، الحدیث ۱۴۴۳، ج ۲، ص ۱۹۲)

**(2) हज़रते सय्यिदुना अनस** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि : "जिस ने अच्छे तरीक़े से वुज़ू किया और सवाब की उम्मीद पर अपने किसी मुसल्मान भाई की इयादत की उसे जहन्नम से सत्तर साल के फ़ासिले तक दूर कर दिया जाएगा।" (سنن ابی داود، کتاب الجنائز، باب فی فضل العیادۃ...الخ، الحدیث ۳۰۹۷، ج ۳، ص ۲۴۸)

**प्यारे इस्लामी भाइयो !** जब भी किसी मरीज़ की इयादत के लिये जाना हो तो मरीज़ से अपने लिये दुआ करवानी चाहिये कि मरीज़ की दुआ रद नहीं होती चुनान्चे

**हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि : **''मरीज़ जब तक तन्दुरुस्त न हो जाए उस की कोई दुआ रद नहीं होती ।''**

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی عیادۃ المرضی...الخ، الحدیث ۱۹، ج ۴، ص ۱۶۶)

**और हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि : ''जब तुम किसी मरीज़ के पास जाओ तो उस से अपने लिये दुआ की दर-ख़्वास्त करो क्यूं कि उस की दुआ फ़िरिश्तों की दुआ की त़रह होती है ।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی عیادۃ المریض، الحدیث ۱۴۴۱، ج ۲، ص ۱۹۱)

## दुआ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सुन्नत के मुत़ाबिक़ मरीज़ों की इयादत करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते महबूब (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा ।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## اَلْحَدِيْثُ الرَّابِعُ عَشَرَ — दुआए शिफ़ा

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَنْ ابْنِ عَبَّاس | قَالَ | قَالَ | رَسُوْلُ اللّٰهِ |
| ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास से (रिवायत है) | | कहा (उन्हों ने) | अल्लाह के रसूल (ने) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| مَا | مِنْ مُّسْلِمٍ | يَّعُوْدُ | مُسْلِمًا |
| नहीं है | कोई मुसल्मान(जो) | इ़यादत करता है | किसी मुसल्मान (की) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| فَيَقُوْلُ | سَبْعَ مَرَّاتٍ | أَسْأَلُ | اللّٰهَ |
| और कहता है | सात बार | मैं सुवाल करता हूं | अल्लाह (से) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| الْعَظِيْمَ | رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ | أَنْ | يَّشْفِيَكَ |
| जो अ़-ज़मत वाला | अ़र्शे अ़ज़ीम का रब | कि | वोह (अल्लाह) शिफ़ा दे तुझ को |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| أَجَلُهٗ | أَنْ يَّكُوْنَ قَدْ حَضَرَ | اِلَّا | شُفِيَ | اِلَّا |
| उस का वक़्त (मौत) | इस के कि आ जाए | सिवाए | शिफ़ा दी जाएगी | मगर |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो मुसल्मान किसी मुसल्मान की इ़यादत को जाए और सात बार येह दुआ पढ़े أَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ أَنْ يَّشْفِيَكَ (मैं अल्लाह अ़-ज़मत वाले से दुआ करता हूं जो अ़र्शे अ़ज़ीम का रब है कि तुझे शिफ़ा दे) अगर मौत का वक़्त नहीं आ गया है तो उसे ज़रूर शिफ़ा होगी।

(مشکوۃ المصابیح، کتاب الجنائز، باب عیادۃ المریض، الحدیث ۱۵۵۳، ج ۱، ص ۲۹۸)

## वज़ाहत :

ह़दीसे पाक में मज़्कूर दुआ़ पढ़ने पर शिफ़ायाबी का येह ह़ुक्म तग़्लीबी है या'नी अक्सर शिफ़ा होगी या मत़लब येह है कि अगर इस अ़मल के तमाम शराइत़ जम्अ़ हों तो بِفَضْلِہٖ تَعَالٰی ज़रूर शिफ़ा होगी। अगर कभी शिफ़ा न हो तो समझो कि हमारी त़रफ़ से कोई कोताही हुई है अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सच्चे हैं। इस (ह़दीस) से मा'लूम हुवा कि मौत का इ़लाज नहीं। मिरक़ात में है कि अगर क़रीबुल मर्ग पर येह दुआ़ पढ़ी जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस की जां कनी आसान होगी और ईमान पर ख़ातिमा नसीब होगा। ग़रज़े कि दुआ़ राएगां न जाएगी शिफ़ाए ज़ाहिर न हो तो शिफ़ाए बात़िन होगी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ।

(माख़ूज़ अज़् मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 416)

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें इ़यादते मरीज़ के वक़्त येह दुआ़ पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## اَلْحَدِيْثُ الْخَامِسُ عَشَرَ — दवा

| رَسُوْلُ اللّٰہِ | قَالَ | قَالَ | عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ |
|---|---|---|---|
| अल्लाह के रसूल (ने) | फ़रमाया | कहा (उन्हों ने) | ह़ज़रते अबू हुरैरा से (रिवायत है) |

| اِلَّا | دَآءً | اللّٰہُ | مَآ اَنْزَلَ |
|---|---|---|---|
| मगर | कोई बीमारी | अल्लाह (ने) | नहीं उतारी (पैदा की) |

| شِفَآءً | لَہٗ | اَنْزَلَ |
|---|---|---|
| शिफ़ा | उस (बीमारी) के लिये | उतारी है (पैदा की है) |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने कोई ऐसी बीमारी पैदा नहीं फ़रमाई जिस के लिये शिफ़ा (या'नी दवा) न उतारी हो।

(صحیح البخاری، کتاب الطب، باب ماانزل اللہ...الخ، الحدیث ۵۶۷۸، ج۴، ص۱۶)

**वज़ाह़त :**

दवा शिफ़ा के लिये इ़ल्लत नहीं है, शिफ़ा अल्लाह तआ़ला के इज़्न से है। मौत और बुढ़ापे के सिवा हर मरज़ की दवा है। जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी को शिफ़ा देना चाहता है तो त़बीब का दिमाग़ उस की दवा तक पहुंच जाता है वरना त़बीब का दिमाग़ उलटा चलता है और वोह इ़लाज ग़लत़ करता है।

(اشعۃ اللمعات، ج۳، ص۲۳۹ व मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 214)

सदरुश्शरीअ़ह मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं कि दवा या'नी इ़लाज करना जाइज़ है जब कि येह

ए'तिक़ाद हो कि शाफ़ी अल्लाह तआ़ला है उस ने दवा को इज़ालए मरज़ के लिये सबब बना दिया है और अगर दवा ही को शिफ़ा देने वाला समझता हो तो ना जाइज़ है।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, जि. 3, स. 126)

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्तफ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ इ़लाज करवाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِىِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰی علیه واٰلهٖ وسلَّم

## اَلْحَدِيْثُ السَّادِسُ عَشَرَ — ता'वीज़

| | | |
|---|---|---|
| عَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكِ نِ الْاَشْجَعِيِّ | قَالَ | كُنَّا نَرْقِي |
| ह़ज़रते औ़फ़ बिन मालिक अश्जई से (रिवायत है) | कहा (उन्हों ने) | हम दम करते थे |

| | | |
|---|---|---|
| فِي الْجَاهِلِيَّةِ | فَقُلْنَا | يَارَسُوْلَ اللّٰهِ (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) |
| (ज़मानए) जाहिलिय्यत में | तो हम ने पूछा | ऐ अल्लाह के रसूल (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) |

| | | |
|---|---|---|
| كَيْفَ تَرٰى | فِيْ ذٰلِكَ؟ | فَقَالَ |
| क्या इर्शाद फ़रमाते हैं | इस (बारे) में | तो फ़रमाया |

| | | | |
|---|---|---|---|
| أَعْرِضُوْا | عَلَيَّ | رُقَاكُمْ | لَابَأْسَ |
| तुम सब पेश करो | मुझ पर | अपने दम (के कलिमात) | कोई ह़रज नहीं |

| | | | |
|---|---|---|---|
| بِالرُّقٰى | مَالَمْ يَكُنْ | فِيْهِ | شِرْكٌ |
| दम (में) | जब तक न हो | उस (दम) में | शिर्क (शिर्किया कलिमात) |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते औ़फ़ बिन मालिक अश्जई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, कहा कि हम लोग ज़मानए जाहिलिय्यत में झाड़ फूंक करते थे (इस्लाम लाने के बा'द) हम ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन मन्तरों के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं ? सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपने मन्तर मुझे सुनाओ। उन मन्तरों में कोई ह़रज नहीं जब तक कि उन में शिर्क न हो।

(صحیح مسلم، کتاب السلام، باب لاباس بالرقی... الخ، الحدیث ۲۲۰۰، ص ۱۲۰۸)

**वज़ाह़त :**

जिन मन्तरों में जिन्न व शयात़ीन के नाम न हों और उन के मा'ना से कुफ़्र लाज़िम न आता हो तो ऐसे मन्तरों को पढ़ने में कोई ह़रज नहीं। उ़-लमाए किराम ने फ़रमाया कि जिस मन्तर का मा'ना मा'लूम न हो उसे नहीं पढ़ सकते लेकिन जो शारेअ़ عَلَیْهِ السَّلَام से सह़ीह़ त़ौर पर मन्क़ूल हो उसे पढ़ सकते हैं अगर्चे उस का मा'ना मा'लूम न हो। (ماخوذ از اشعۃ اللمعات، ج٣،ص٦٤٢)

सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्त़रीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی अपनी मायानाज़ तालीफ़ बहारे शरीअ़त में लिखते हैं :

गले में ता'वीज़ लटकाना जाइज़ है जब कि वोह ता'वीज़ जाइज़ हो या'नी आयाते क़ुरआनिया या अस्माए इलाहिय्यह या अद्इयह (या'नी दुआ़ओं) से ता'वीज़ किया जाए और बा'ज़ ह़दीसों में जो मुमा-न-अ़त आई है इस से मुराद वोह ता'वीज़ात हैं जो ना जाइज़ अल्फ़ाज़ पर मुश्तमिल हों, जो ज़मानए जाहिलिय्यत में किये जाते थे। इसी त़रह़ ता'वीज़ात और आयात व अह़ादीस व अद्इयह को रिकाबी में लिख कर मरीज़ को ब निय्यते शिफ़ा पिलाना भी जाइज़ है। जुनुब (या'नी जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो) व ह़ाइज़ व नफ़्सा (या'नी हैज़ व निफ़ास वाली औ़रत) भी ता'वीज़ात को गले में पहन सकते हैं, बाज़ू पर बांध सकते हैं जब कि ग़िलाफ़ में हों।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3, हिस्सा : 16, स. 56)

इस ह़दीस की बिना पर सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं कि अ़मल की तासीर के लिये शैख़ को अ़मल सुना लेना, उस से इजाज़त ले लेना मुफ़ीद है अगर्चे (अ़मल करने वाला) उस के मा'ना जानता हो। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 223)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्ता़रिय्या के तह़्त दुखियारे मुसल्मानों का अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्ता़र क़ादिरी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی के अ़ता कर्दा ता'वीज़ात के ज़रीए़ फ़ी सबीलिल्लाह इलाज किया जाता है नीज़ इस्तिख़ारा करने का सिल्सिला भी है। रोज़ाना हज़ारों मुसल्मान इस से मुस्तफ़ीज़ होते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ इस वक़्त मजलिस की त़रफ़ से बिला मुबा-लग़ा लाखों ता'वीज़ात और ता'ज़ियत, इ़यादत और तसल्ली नामे भेजे जा चुके हैं। ता'वीज़ाते अ़त्ता़रिय्या की मु-तअ़द्दद बहारें हैं जो मक-त-बतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा ''ख़ौफ़नाक बला'', ''पुर असरार कुत्ता'' और ''सींगों वाली दुल्हन'' नामी रसाइल में मुला-ह़ज़ा की जा सकती हैं। ता'वीज़ात लेने वाले इस्लामी भाइयों को चाहिये कि वोह अपने शह्र में होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाएं और वहां ता'वीज़ाते अ़त्ता़रिय्या के बस्ते (स्टॉल) से ता'वीज़ ह़ासिल करें।

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें इलाज के दीगर ज़राएअ़ अपनाने के साथ साथ ता'वीज़ात के ज़रीए़ भी इलाज करवाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

# لذ़्ज़तों को ख़त्म करने वाली चीज़ اَلْحَدِيْثُ السَّابِعُ عَشَرَ

| रَسُوْلُ اللّٰهِ | قَالَ | قَالَ | عَنْ أَبِیْ هُرَيْرَةَ |
|---|---|---|---|
| अल्लाह के रसूल (ने) | फ़रमाया | कहा (उन्हों ने) | ह़ज़रते अबू हुरैरा से (रिवायत है) |

| (الْمَوْتِ) | هَاذِمِ اللَّذَّاتِ | أَكْثِرُوْا ذِكْرَ |
|---|---|---|
| या'नी मौत को | लज़्ज़तों (को) ख़त्म कर देने वाली | अक्सरो बेशतर याद करो |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि, लज़्ज़तों को ख़त्म कर देने वाली चीज़ (या'नी मौत) को अक्सरो बेशतर याद करो। (سنن نسائی، کتاب الجنائز، باب کثرۃ ذکر الموت، ج۴، ص۴)

**वज़ाह़त :**

हर शख़्स की मौत उस की दुन्यावी लज़्ज़तें खाने पीने सोने वग़ैरा के मज़े फ़ना कर देती है। हां मोमिन मुर्दे को ज़िन्दों के ज़िक्र और तिलावते कुरआन से लज़्ज़त आती है नीज़ ज़ियारते क़ब्र करने वाले से उन्स होता है बरज़ख़ी (या'नी आ़लमे बरज़ख़ की) लज़्ज़तें पाता है जो यहां की लज़्ज़तों से कहीं आ'ला हैं। उ़-लमा फ़रमाते हैं और जो रोज़ाना मौत को याद कर लिया करे उस के लिये द-र-जए शहादत है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 439)

**इस** ह़दीस में मौत को याद करने की ताकीद इस लिये की गई ताकि हम क़ियामत के इम्तिह़ान और ज़ादे आख़िरत के ह़ुसूल से ग़ाफ़िल न हो जाएं। (مرقاۃ المفاتیح، ج۴، ص۷۴)

## दुआ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें मौत को याद रखने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## اَلْحَدِيْثُ الثَّامِنُ عَشَرَ — मौत की आरज़ू

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَنْ أَبِیْ هُرَيْرَةَ | قَالَ | قَالَ | رَسُوْلُ اللّٰهِ |
| ह़ज़रते अबू हुरैरा से (रिवायत है) | | कहा (उन्हों ने कि) | अल्लाह के रसूल (ने) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| لَا يَتَمَنَّيَنَّ | أَحَدُ مِّنْ كُمُ | الْمَوْتَ | اِمَّا |
| आरज़ू न करे | तुम में से कोई भी | मौत (की) | या तो |

| | | | |
|---|---|---|---|
| مُحْسِنًا | فَلَعَلَّهٗ | أَنْ يَّزْدَادَ | خَيْرًا |
| होगा वोह नेक (तो) | मुम्किन है (शायद) | कि ज़ियादा करे वोह | नेकी |

| | | | |
|---|---|---|---|
| وَاِمَّا | مُسِيْئًا | فَلَعَلَّهٗ | اَنْ يَّسْتَعْتِبَ |
| और या तो | होगा वोह बुराई करने वाला तो | शायद | राज़ी कर ले (अल्लाह को) |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''तुम में कोई मौत की आरज़ू न करे (इस लिये कि) अगर वोह निकूकार होगा तो शायद और ज़ियादा नेकी करे और अगर बदकार होगा तो शायद तौबा कर के अल्लाह तआ़ला को राज़ी कर ले।''

(سنن نسائی، کتاب الجنائز، باب تمنّی الموت، ج۴، ص۲)

### वज़ाह़त :

इस ह़दीस का मत़लब येह है कि मोमिन की ज़िन्दगी बहर ह़ाल अच्छी है क्यूं कि आ'माल इसी में हो सकते हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 436)

दुन्यावी तकालीफ़ जैसे बीमारी या ग़रीबी वग़ैरा की वजह से मौत की तमन्ना करना मक्रूह है, इस लिये कि येह बे सब्री और तक्दीरे इलाही से ना राज़गी की निशानी है जब कि दीनी ज़रर के ख़ौफ़ से मौत की तमन्ना करना मक्रूह नहीं है। अल्लाह तआ़ला की महृब्बत और उस की मुलाक़ात के शौक़ में मौत की तमन्ना करना नीज़ इस दुन्या की तंगी और परेशानी से छुटकारा ह़ासिल करने और मुल्के आख़िरत और जन्नत में पहुंचने के लिये मौत की आरज़ू करना ईमान और इस के कमाल की निशानी है।

(ماخوذ از اشعۃ اللمعات، ج۱، ص۶۹۷)

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ **!** हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें म-दनी इन्आमात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** उम्मते महृबूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰی علیه واٰله وسلَّم

## اَلْحَدِيْثُ التَّاسِعُ عَشَرَ — सूरए यासीन

| عَنْ مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ | قَالَ | النَّبِيُّ |
|---|---|---|
| हज़रते मा'क़िल बिन यसार से (रिवायत है) | कहा (उन्हों ने) | फ़रमाया | अल्लाह के नबी (ने) |

| اِقْرَءُ وْا | سُوْرَةَ يٰسٓ | عَلٰى مَوْتَاكُمْ |
|---|---|---|
| पढ़ो तुम | सूरए यासीन शरीफ़ | अपने मरने वालों पर |

**बा मुहा-वरा तरजमा :** हज़रते मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि, अपने मरने वालों के क़रीब सूरए यासीन शरीफ़ पढ़ो ।

(سنن ابی داود، کتاب الجنائز، باب القراءۃ، الحدیث ۳۱۲۱، ج ۳، ص ۲۵۶)

**वज़ाहत :**

ज़ाहिर मुराद येह है कि मौत के वक़्त सूरए यासीन पढ़ी जाए, येह भी हो सकता है कि मौत के बा'द घर में पढ़ी जाए या क़ब्र के सिरहाने पढ़ी जाए । (اشعۃ اللمعات، ج ۱، ص ۷۰۶)

क़ुरआने मजीद की हर सूरह में कोई ख़ास फ़ाएदा होता है सूरए यासीन में हल्ले मुश्किलात की तासीर है ।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 2, स. 446)

**फ़िक्रे मदीना :**

क्या आज आप ने कन्ज़ुल ईमान से कम अज़ कम तीन आयात (बमअ तरजमा व तफ़्सीर) तिलावत करने या सुनने की सआदत हासिल की ?

## दुआ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सूरए यासीन शरीफ़ की ब-र-कतें नसीब फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## اَلْحَدِیْثُ الْعِشْرُوْنَ मौत के वक़्त तल्क़ीन

| عَنْ أَبِیْ سَعِیْدِنِ الخدْرِیْ | یَقُوْلُ | قَالَ |
|---|---|---|
| ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी से (रिवायत है) | कहा (उन्हों ने) | फ़रमाया |

| رَسُوْلُ اللّٰهِ | لَقِّنُوْا | مَوْتَاكُمْ | قولَ لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ |
|---|---|---|---|
| अल्लाह के रसूल (ने) | तल्क़ीन करो तुम | अपने मरने वालों को | कलिमए त़य्यिबा की |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपने मरने वालों को कलिमए त़य्यिबा की तल्क़ीन करो । (سنن ابی داود، کتاب الجنائز، باب فی التلقین، الحدیث ۳۱۱۷، ج ۳، ص ۲۵۵)

**वज़ाह़त :**

कलिमए त़य्यिबा सिखाने का येह हुक्म इस्तिह़बाबी है और येही जम्हूर उ़-लमा का मज़्हब है। इस ह़दीस का मत़लब येह है कि जो मर रहा हो उसे कलिमा सिखाओ इस त़रह़ कि उस के पास बुलन्द आवाज़ से कलिमा पढ़ो इस का हुक्म न दो क्यूं कि ह़दीस शरीफ़ में है कि जिस का आख़िरी कलाम لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـه हो वोह जन्नती है। (المستدرک للحاکم، کتاب الدعاء... الخ، باب من کان آخر کلامہ... الخ، الحدیث ۱۸۸۵، ج ۲، ص ۱۷۵) ख़याल रहे कि अगर मोमिन ब वक़्ते मौत कलिमा न पढ़ सके जैसे बेहोश या शहीद वग़ैरा तो वोह ईमान पर ही मरा कि ज़िन्दगी में मोमिन था लिहाज़ा अब भी मोमिन बल्कि अगर नज़्अ़ की ग़शी में उस के मुंह से कलिमए कुफ़्र सुना जाए तब भी वोह मोमिन ही होगा उस का कफ़न दफ़न नमाज़ सब कुछ होगी, क्यूं कि ग़शी की ह़ालत का इरतिदाद मो'तबर नहीं। इस से मा'लूम हुवा कि मरते वक़्त कलिमा पढ़ाना इस ह़दीसे मज़्कूरा पर अ़मल के लिये है न कि उसे मुसल्मान बनाने के लिये, मुसल्मान तो वोह पहले ही है। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 2, स. 444)

वक़्ते मौत का आ जाना बतौरे आ़दत यक़ीनन मा'लूम हो जाता है। उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰه ने फ़रमाया कि : मौत का वक़्त आ जाने की (बा'ज़) अ़लामात येह हैं : (1) उस वक़्त पाउं इस क़दर सुस्त हो जाते हैं कि अगर उन्हें खड़ा किया जाए तो खड़े नहीं रह सकते, (2) नाक टेढ़ी हो जाती है, (3) आंखों और कान के दरमियानी हिस्से का लटक जाना। (ماخوذ از اشعۃ اللمعات، ج۱، ص۷۰۴)

## तल्क़ीन का त़रीक़ा :

सदरुश्शरीअ़ह बदरुत़्त़रीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِي अपनी मायानाज़ तालीफ़ बहारे शरीअ़त में लिखते हैं : जां कनी की ह़ालत में जब तक रूह़ गले को न आई (हो) मरने वाले को तल्क़ीन करें या'नी उस के पास बुलन्द आवाज़ से اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه पढ़ें मगर उसे (या'नी मरने वाले को) इस के कहने का हुक्म न करें। जब उस (या'नी मरने वाले) ने कलिमा पढ़ लिया तो तल्क़ीन मौक़ूफ़ कर दें। हां अगर कलिमा पढ़ने के बा'द उस ने कोई बात की तो फिर तल्क़ीन करें कि उस का आख़िरी कलाम لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه हो।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 4, स. 157)

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें ईमान की सलामती अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

## اَلْحَدِیْثُ الْحَادِیْ وَالْعِشْرُوْنَ कफ़न

| | | | |
|---|---|---|---|
| رَسُوْلُ اللّٰهِ | قَالَ | قَالَ | عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ |
| अल्लाह के रसूल (ने) | फ़रमाया | कहा (उन्हों ने) | ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास से (रिवायत है) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| فَاِنَّهَا | الْبَيَاضَ | مِنْ ثِيَابِكُمْ | اِلْبَسُوْا |
| बेशक येह (सफ़ेद कपड़े) | सफ़ेद | अपने कपड़ों में से | पहनो तुम सब |

| | | | |
|---|---|---|---|
| مَوْتَاكُمْ | فِيْهَا | وَكَفِّنُوْا | مِنْ خَيْرِ ثِيَابِكُمْ |
| अपने मुर्दों (को) | इन (कपड़ों) में | और कफ़्नाओ तुम | तुम्हारे बेहतर कपड़े हैं |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम लोग सफ़ेद कपड़े पहना करो इस लिये कि वोह उ़म्दा क़िस्म के कपड़े हैं और सफ़ेद कपड़ों में अपने मुर्दों को कफ़्नाया करो। (جامع الترمذی، کتاب الجنائز، باب ما یستحب من الاکفان، الحدیث ۹۹۶، ج ۲، ص ۳۰۱)

**वज़ाह़त :**

येह हुक्म इस्तिह़बाबी है कि ज़िन्दों और मुर्दों के लिये सफ़ेद कपड़ा मुस्तह़ब है वरना औ़रत मय्यित के लिये रेशमी, सूती, सुर्ख़, पीला हर त़रह़ का कफ़न जाइज़ है अगर्चे बेहतर सफ़ेद और सूती है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 463)

जो कपड़ा ज़िन्दगी में पहन सकता है उस का कफ़न दिया जा सकता है और जो ज़िन्दगी में ना जाइज़ उस का कफ़न भी ना जाइज़। मय्यित को कफ़न देना फ़र्ज़े किफ़ाया है। कफ़न के तीन द-रजे हैं :

(1) ज़रूरत (2) किफ़ायत (3) सुन्नत

मर्द के लिये कफ़ने सुन्नत : तीन कपड़े हैं।

(1) लिफ़ाफ़ा (2) इज़ार (3) क़मीस

मर्द के लिये कफ़ने किफ़ायत : दो कपड़े हैं।

(1) लिफ़ाफ़ा (2) इज़ार

औ़रत के लिये कफ़ने सुन्नत : पांच कपड़े हैं।

(1) लिफ़ाफ़ा (2) इज़ार (3) क़मीस

(4) ओढ़नी (5) सीना बन्द

औ़रत के लिये कफ़ने किफ़ायत : तीन कपड़े हैं।

(1) लिफ़ाफ़ा (2) इज़ार (3) ओढ़नी या

(1) लिफ़ाफ़ा (2) क़मीस (3) ओढ़नी

मर्द व औ़रत के लिये कफ़ने ज़रूरत : कफ़ने ज़रूरत दोनों के लिये येह कि जो मुयस्सर आए और कम अज़ कम इतना तो हो कि सारा बदन ढक जाए।

(1) लिफ़ाफ़ा (या'नी चादर) : मय्यित के क़द से इतनी बड़ी हो कि दोनों त़रफ़ बांध सकें।

(2) इज़ार (या'नी तहबन्द) : चोटी से क़दम तक या'नी लिफ़ाफ़ा से इतना छोटा जो बन्दिश के लिये ज़ियादा था।

(3) क़मीस (या'नी कफ़नी) : गरदन से घुटनों के नीचे तक और येह आगे और पीछे दोनों त़रफ़ बराबर हो इस में चाक और आस्तीनें न हों। मर्द की कफ़नी कन्धों पर चीरें और औ़रत के लिये सीने की त़रफ़।

(4) ओढ़नी : तीन हाथ की होनी चाहिये या'नी डेढ़ गज़।

(5) सीना बन्द : पिस्तान से नाफ़ तक और बेहतर येह है कि रान तक हो। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 4, स. 166, 168)

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें क़ब्र की तंगी और वह़्शत से बचा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## اَلْحَدِيْثُ الثَّانِىْ وَالْعِشْرُوْنَ मुर्दों का तज़्किरए ख़ैर

| | | | |
|---|---|---|---|
| قَالَ | رَسُوْلَ اللّٰهِ | اَنَّ | عَنِ ابْنِ عُمَرَ |
| फ़रमाया | अल्लाह के रसूल (ने) | बेशक | ह़ज़रते इब्ने उ़मर से (रिवायत है) |

| | | |
|---|---|---|
| مَوْتَاكُمْ | مَحَاسِنَ | اُذْكُرُوْا |
| अपने मुर्दों (की) | ख़ूबियां (अच्छाइयां) | याद करो (ज़िक्र करो) |

| | |
|---|---|
| عَنْ مَسَاوِيْهِمْ | وَكُفُّوْا |
| उ़यूब व नक़ाइस (बयान करने) से | और रुको (बाज़ रहो) |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अपने मुर्दों की नेकियों का चरचा करो और उन की बुराइयों से चश्म पोशी करो। (جامع الترمذی، کتاب الجنائز، باب آخر، الحدیث ۱۰۲۱، ج۲، ص۳۱۲)

**वज़ाह़त :**

इस ह़दीस का मत़लब येह है : मुसल्मान की बा'दे मौत अच्छाइयां कभी कभी बयान किया करो कि नेकों के ज़िक्र से रह़मत उतरती है। उन की बुराइयां बयान करने से बाज़ रहो क्यूं कि मुर्दे की ग़ीबत ज़िन्दा की ग़ीबत से सख़्त तर है कि ज़िन्दा से मुआ़फ़ी मांगी जा सकती है मुर्दे से नहीं। इसी लिये उ़-लमा رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं कि अगर ग़स्साल मुर्दे पर कोई नेक अ़लामत देखे ख़ुश्बू या चेहरे का नूर, तो लोगों में चरचा करे, और अगर बुरी अ़लामत देखे बदबू या चेहरे का बिगड़ जाना तो उस का किसी से ज़िक्र न करे, क्यूं कि हमें भी मरना है, न

मा'लूम हमारा क्या ह़ाल हो, बे दीन की बुराई ज़रूर करे ताकि लोग बे दीनी से बचें, यज़ीद व ह़ज्जाज वग़ैरा को आज भी बुरा कहा जाता है क्यूं कि येह फ़ुस्साक़ हैं, उन का फ़िस्क़ ज़ाहिर करो ताकि (लोग) उन जैसे कामों से बचें। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 481)

कुफ़्फ़ार की बुराइयां बयान करनी जाइज़ हैं अगर्चे वोह मर गए हों अलबत्ता अगर मरने वाले कुफ़्फ़ार के अहलो इ़याल मुसल्मान हों और उन काफ़िर मां बाप की बुराई करने से उन्हें ईज़ा पहुंचे तो इस से बचना ज़रूरी है कि अब येह ईज़ाए मुस्लिम है और मुसल्मान को ईज़ा देना जाइज़ नहीं। (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 2, स. 886)

## फ़िक्रे मदीना :

क्या आज आप ने झूट, ग़ीबत, चुग़ली, ह़सद, तकब्बुर और वा'दा ख़िलाफ़ी से ह़त्तल इम्कान बचने की कोशिश की ?

## दुआ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें ज़बान की ह़िफ़ाज़त की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## اَلْحَدِيْثُ الثَّالِثُ وَالْعِشْرُوْنَ सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे मुबारक

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْر | قَالَ | كَانَ | بِالْمَدِيْنَةِ |
| उ़र्वह बिन ज़ुबैर से (रिवायत है) | कहा (उन्हों ने) | थे | मदीना शरीफ़ में |

| | | | |
|---|---|---|---|
| رَجُلَانِ | أَحَدُهُمَا | يَلْحَدُ | وَالْاٰخَرُ |
| दो आदमी | उन दोनों में से एक | लहूद (या'नी बग़ली क़ब्र) खोदते थे | और दूसरे |

| | | | |
|---|---|---|---|
| لَايَلْحَدُ | فَقَالُوْا | أَيُّهُمَا | جَآءَ |
| लहूद नहीं खोदते थे | तो कहा उन्हों (सह़ाबा) ने | उन दोनों में से जो | आया |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| أَوَّلًا | عَمِلَ عَمَلَهٗ | فَجَآءَ | الَّذِيْ | يَلْحَدُ |
| पहले | वोह अपना काम करेगा | तो आए | वोह जो | लहूद (क़ब्र) खोदते थे |

| | |
|---|---|
| فَلَحَدَ | لِرَسُوْلِ اللّٰهِ (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) |
| तो लहूद बनाई उन्हों ने | अल्लाह के रसूल (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के लिये |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते उ़र्वह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, उन्हों ने फ़रमाया कि मदीना शरीफ़ में दो आदमी क़ब्र खोदा करते थे, एक लहूद या'नी बग़ली खोदते थे और दूसरे लहूद नहीं खोदते थे (बल्कि शिक़ या'नी सन्दूक़ी क़ब्र बनाते थे) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाल पर सह़ाबा ने आपस में त़ै किया कि जो उन दोनों में से पहले आएगा वोह अपना काम करेगा। तो पहले वोह सह़ाबी आए जो लहूद खोदा करते थे तो उन्हों ने सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये बग़ली क़ब्र तय्यार की। (مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الجنائز، باب دفن المیّت، فصل الثانی، الحدیث ۱۷۰۰، ج ۱، ص ۳۲۳)

## वज़ाहत :

लहूद खोदने वाले सहाबी हज़रते ज़ैद इब्ने सुहैल अन्सारी या'नी अबू तल्हा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ थे और सन्दूक़ी खोदने वाले हज़रते अबू उ़बैदा इब्ने जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ थे। मदीने में दो ही बुज़ुर्ग थे जिन्हें क़ब्र खोदने में महारत थी आज कल की तरह़ उन का पेशा गोरकुनी न था। हर मुसल्मान को कफ़न सीना और क़ब्र खोदना सीखना चाहिये कि ना मा'लूम मौत कहां वाक़ेअ़ हो। इस ह़दीस से मा'लूम होता है कि सन्दूक़ी क़ब्र मन्अ़ नहीं वरना सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जैसे सहाबी येह न खोदा करते और सहाबए किबार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم उन दोनों को पैग़ाम न भेजते। येह भी ख़याल रहे कि अगर्चे तमाम सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم क़ब्र खोदना जानते थे मगर वोह दोनों ह़ज़रात बहुत मश्शाक़ थे उन्हों ने चाहा कि क़ब्रे अन्वर बहुत आ'ला द-रजे की तय्यार हो जो बहुत तजरिबा कार ही कर सकता है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 490)

## क़ब्र की दो क़िस्में हैं :

**(1) लहूद (2) सन्दूक़**

**(1) लहूद :** लहूद बनाने का त़रीक़ा येह है कि क़ब्र खोदने के बा'द मय्यित रखने के लिये क़िब्ला की जानिब जगह खोदी जाती है। लहूद सुन्नत है अगर ज़मीन इस क़ाबिल हो तो येही बनाएं और अगर ज़मीन नर्म हो तो सन्दूक़ में मुज़ा-यक़ा नहीं।

**(2) सन्दूक़ :** इस में क़िब्ले की जानिब जगह नहीं खोदी जाती, सिर्फ़ क़ब्र खोदी जाती है।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 192)

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न अ़त़ा फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## اَلْحَدِيْثُ الرَّابِعُ وَالْعِشْرُوْنَ मय्यित पर रोना

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ ابْنِ عُمَرَ | قَالَ | قَالَ | رَسُوْلُ اللّٰهِ |
| ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर से (रिवायत है) | कहा (उन्हों ने) | फ़रमाया | अल्लाह के रसूल (ने) |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| أَلَا تَسْمَعُوْنَ | اِنَّ | اللّٰهَ | لَايُعَذِّبُ | بِدَمْعِ الْعَيْنِ |
| क्या तुम नहीं सुनते | बेशक | अल्लाह | अ़ज़ाब नहीं फ़रमाता | आंख के आंसू के सबब |

| | | |
|---|---|---|
| وَلَا | بِحُزْنِ الْقَلْبِ | وَلٰكِنْ يُّعَذِّبُ |
| और न | दिल (के) ग़म के सबब | लेकिन अ़ज़ाब देता है |

| | | | |
|---|---|---|---|
| بِهٰذَا | وَأَشَارَ | اِلٰى لِسَانِهٖ | أَوْيَرْحَمُ |
| इस के सबब | और इशारा फ़रमाया | अपनी ज़बान की त़रफ़ | या रह़म फ़रमाता है |

| | | |
|---|---|---|
| وَاِنَّ الْمَيِّتَ | يُعَذَّبُ | بِبُكَآءِ أَهْلِهٖ عَلَيْهِ |
| और बेशक मय्यित (पर) | ज़रूर अ़ज़ाब होता है | उस के घर वालों के उस पर रोने के सबब |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम नहीं सुनते कि बेशक अल्लाह तआ़ला आंख के आंसू और दिल के ग़म के सबब अ़ज़ाब नहीं फ़रमाता और ज़बान की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया, लेकिन इस के सबब अ़ज़ाब या रह़म फ़रमाता है और घर वालों के रोने की वजह से मय्यित पर अ़ज़ाब होता है।

(صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب البقاء عند المریض، الحدیث ۱۳۰۴، ج۱، ص۴۴۱)

**वज़ाह़त :**

इस ह़दीस का मत़लब येह है कि आंख के आंसू और दिल

के ग़म के सबब अल्लाह तआ़ला अ़ज़ाब नहीं फ़रमाता बल्कि अगर येह दोनों (या'नी आंख का आंसू और दिल का ग़म) रह़मत की वजह से हों तो इन पर सवाब मिलता है। (مرقاۃ المفاتیح، ج۴، ص۲۰۷)

और अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब और उस की रह़मत ज़बान के फ़े'ल पर मुरत्तब होती है, अगर ज़बान से बैन और नौह़ा किया (या'नी मय्यित के औसाफ़ मुबा-लग़ा के साथ बयान कर के आवाज़ से रोए (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 203)) और ना मुनासिब अल्फ़ाज़ कहे तो (कहने वाला) अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ बनता है और अगर ख़ुदा तआ़ला की ह़म्दो सना करता है और اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیْہِ رٰجِعُوْن पढ़ता है तो रह़मत व सवाब का मुस्तह़िक़ क़रार पाता है।

(اشعۃ اللمعات، ج۱، ص۷۴۷)

और "घर वालों के रोने की वजह से मय्यित पर अ़ज़ाब होने" का मत़लब येह है कि जब मरने वाले ने बैन और नौह़ा करने की वसिय्यत की हो तो मय्यित पर इस का अ़ज़ाब होता है और अगर मरने वाले ने इस क़िस्म की वसिय्यत न की हो फिर इस पर कोई बैन व नौह़ा करे तो इस का वबाल नौह़ा करने वाले पर ही है, अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है : وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰی तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी। (پ۲۲، سورۃ الفاطر:۱۸)

एक क़ौल येह भी है कि यहां मय्यित से मुराद वोह है जिस की जान निकल रही हो और अ़ज़ाब से मुराद तक्लीफ़ है या'नी अगर जान निकलते वक़्त रोने वालों का शोर मच जाए तो इस शोर से मरने वाले को तक्लीफ़ होती है। (مرقاۃ المفاتیح، ج۴، ص۲۰۸) وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَمُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

## दुआ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें ग़मी व ख़ुशी में हुक्मे शर–अ़ पर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें म–दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें दा'वते इस्लामी के म–दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

# اَلْحَدِيْثُ الْخَامِسُ وَالْعِشْرُوْنَ बैतुल ह़म्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَنْ اَبِیْ مُوْسٰی الْاَشْعَرِیِّ | اَنَّ | رَسُوْلَ اللّٰهِ | قال |
| ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री से (रिवायत है) | बेशक | अल्लाह के रसूल (ने) | फ़रमाया |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| اِذَا | مَاتَ | وَلَدُ | الْعَبْدِ | قَالَ |
| जब | फ़ौत होता है | बेटा | किसी बन्दे (का) | तो फ़रमाता है |

| | | | |
|---|---|---|---|
| اللّٰهُ | لِمَلَائِكَتِهٖ | قَبَضْتُمْ | وَلَدَعَبْدِیْ |
| अल्लाह तआ़ला | अपने फ़िरिश्तों से कि | रूह़ क़ब्ज़ की तुम ने | मेरे बन्दे (के) बेटे की |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| فَيَقُوْلُوْنَ | نَعَمْ | فَيَقُوْلُ | قَبَضْتُمْ | ثَمَرَةَ |
| तो कहते हैं (फ़िरिश्ते) | हां | तो फ़रमाता है (अल्लाह तआ़ला) | तोड़ लिया तुम ने | फल |

| | | | |
|---|---|---|---|
| فُؤَادِهٖ | فَيَقُوْلُوْنَ | نَعَمْ | فَيَقُوْلُ |
| उस के दिल का | तो कहते हैं (फ़िरिश्ते) | हां | तो फ़रमाता है (अल्लाह तआ़ला) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| مَاذَاقَالَ | عَبْدِیْ | فَيَقُوْلُوْنَ | حَمِدَكَ |
| क्या कहा | मेरे बन्दे (ने) | तो कहते हैं (फ़िरिश्ते) | ह़म्द की उस (बन्दे) ने तेरी |

| | | | |
|---|---|---|---|
| وَاسْتَرْجَعَ | فَيَقُوْلُ اللّٰهُ | اِبْنُوْا | لِعَبْدِیْ |
| और اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ पढ़ा | तो फ़रमाता है अल्लाह तआ़ला | बनाओ | मेरे बन्दे के लिये |

| | | |
|---|---|---|
| بِبَيْتًافِي الْجَنَّةِ | وَسَمُّوْهُ | بَيْتَ الْحَمْدِ |
| जन्नत में घर | और नाम रखो उस (घर) का | बैतुल ह़म्द (ह़म्द का घर) |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ

से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब किसी मोमिन बन्दे का बेटा मर जाता है तो अल्लाह तआ़ला मलाएका से फ़रमाता है कि तुम ने मेरे बन्दे के बेटे की रूह क़ब्ज़ कर ली ? तो वोह अ़र्ज़ करते हैं, हां। तो फ़रमाता है : तुम ने उस के दिल का फल तोड़ लिया ? तो अ़र्ज़ करते हैं, हां। फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है (इस मुसीबत पर) मेरे बन्दे ने क्या कहा ? तो फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं कि तेरी ता'रीफ़ की और اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْن पढ़ा तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है मेरे इस बन्दे के लिये जन्नत में एक घर बनाओ और उस का नाम **बैतुल हम्द** रखो।

(جامع الترمذی، کتاب الجنائز، باب فضل المصیبۃ اذا احتسب، الحدیث ۱۰۲۳، ج ۲، ص ۳۱۳)

## वज़ाहत :

येह सुवाल व जवाब उन फ़िरिश्तों से होते हैं जो मय्यित की रूह बारगाहे इलाही में ले जाते हैं। इस सुवाल से उन्हें गवाह बनाना मक़्सूद है वरना रब तआ़ला तो अ़लीम व ख़बीर है। ख़याल रहे कि जन्नत में बा'ज़ महल रब की त़रफ़ से पहले ही बन चुके हैं और बा'ज़ इन्सान के आ'माल पर बनते हैं यहां उस दूसरे महल का ज़िक्र है जैसे यहां मकानों के नाम कामों से होते हैं वैसे ही वहां उन महल्लात के नाम आ'माल से हैं।

(माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह, जि. 2, स. 507)

मुसीबत पर सब्र करने से दो सवाब मिलते हैं एक मुसीबत का दूसरा सब्र का। और जज़्अ़ फ़ज़्अ़ से दोनों सवाब जाते रहते हैं।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 4, स. 168)

शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया

''जिसे कोई मुसीबत पहुंची और वोह मुसीबत को याद कर के اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیْہِ رٰجِعُوْن कहे अगर्चे उस मुसीबत को कितना ही ज़माना गुज़र चुका हो तो अल्लाह उस के लिये वोही सवाब लिखेगा जो मुसीबत के दिन लिखा था।'' (سنن ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی الصبر علی المصیبۃ، رقم ۱۶۰۰، ج ۲، ص ۲۶۸)

## दुआ :

**या रब्बे मुस्तफ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें मसाइब पर सब्र नसीब फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

# اَلْحَدِيْثُ السَّادِسُ وَالْعِشْرُوْنَ साबिरा मां को जन्नत की बिशारत

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ | قَالَ | قَالَ | رَسُوْلُ اللّٰهِ |
| हज़रते मुआज़ बिन जबल से (रिवायत है) | कहा (उन्हों ने) | फ़रमाया | अल्लाह के रसूल (ने) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| مَا | مِنْ مُسْلِمَيْنِ | يَتَوَفّٰى | لَهُمَا |
| नहीं (हैं) | दो ऐसे मुसल्मान (कि) | फ़ौत हो जाएं | उन दोनों के |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ثَلَاثَةٌ | اِلَّا | اَدْخَلَهُمَا | اللّٰهُ | الْجَنَّةَ |
| तीन (बच्चे) | मगर येह कि | दाख़िल करेगा उन दोनों को | अल्लाह तआ़ला | जन्नत (में) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| بِفَضْلِ رَحْمَتِهٖ | اِيَّاهُمَا | فَقَالُوْا | يَارَسُوْلَ اللّٰهِ |
| अपनी रह़मत के फ़ज़्ल से | ख़ास उन दो को | तो अ़र्ज़ किया उन्हों (सह़ाबा) ने | ऐ अल्लाह के रसूल |

| | | |
|---|---|---|
| أَوِاثْنَانِ | قَالَ | أَوِاثْنَانِ |
| या दो (बच्चे फ़ौत हो जाएं) | फ़रमाया अल्लाह के रसूल (ने) | या दो (बच्चे फ़ौत हो जाएं) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| قَالُوْا | أَوْوَاحِدٌ | قَالَ | أَوْوَاحِدٌ |
| तो अ़र्ज़ किया उन्हों (सह़ाबा) ने | या एक (बच्चा) | फ़रमाया अल्लाह के रसूल (ने) | या एक (बच्चा) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ثُمَّ قَالَ | وَ | الَّذِىْ | نَفْسِىْ بِيَدِهٖ |
| फिर फ़रमाया अल्लाह के रसूल (ने) | क़सम है | उस ज़ात की | जिस के हाथ में मेरी जान है |

| | | | |
|---|---|---|---|
| اِنَّ السِّقْطَ | لَيَجُرُّ | اُمَّهٗ | بِسَرَرِهٖ |
| बेशक कच्चा बच्चा | ज़रूर खींचेगा | अपनी मां (को) | नारू (नाफ़) के ज़रीए |

| | | |
|---|---|---|
| اِلَى الْجَنَّةِ | اِذَا | اِحْتَسَبَتْهُ |
| जन्नत की त़रफ़ | जब कि | (मां) सवाब की त़ालिब हुई हो उस तक्लीफ़ पर |

**बा मुहा़-वरा तरजमा :** ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि, जिन दो मुसल्मानों के तीन बच्चे मर जाएं तो अल्लाह तआ़ला उन दोनों को अपने फ़ज़्लो रह़मत से जन्नत में दाखि़ल फ़रमाएगा। सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर दो बच्चे इन्तिक़ाल कर जाएं तो ? सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, दो का भी येही अज्र है। फिर सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर एक फ़ौत हो जाए तो ? सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, एक का भी येही अज्र है। फिर फ़रमाया, क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है कि ख़ाम ह़म्ल जो साक़ित़ हो जाता है अपनी मां को नारू के ज़रीए़ जन्नत की त़रफ़ खींचेगा जब कि मां (उस तक्लीफ़ पर) सब्र और सवाब की त़ालिब हुई हो। (مشکوۃ المصابیح، کتاب الجنائز، باب البکاء علی المیّت، الحدیث۱۷۵۴، ج۱، ص۳۳۲)

**वज़ाह़त :**

दो मुसल्मानों से मुराद मां बाप हैं जिन के छोटे बच्चे फ़ौत हों और वोह सब्र करें। इस ह़दीसे मुबा-रका में बयान कर्दा तरतीब से कमाले नुक़्सान की त़रफ़ इशारा है या'नी अव्वल नम्बर और कामिल मुस्तह़िक़े रह़मत तो वोह हैं जो तीन बच्चों पर सब्र करें फिर वोह भी जो दो या एक पर सब्र करें कि येह दोनों पहले के साथ मुल्ह़िक़ हैं।

नारू जो बच्चे के नाफ़ में लम्बा सा होता है जिसे वक़्ते पैदाइश दाई काटती है। अगर्चे वोह काट कर फेंक दिया जाता है,

मगर क़ियामत में उस बच्चे के साथ होगा क्यूं कि रब तआ़ला अज्ज़ाए बदन को वहां जम्अ़ फ़रमाएगा, ह़त्ता कि क़ुल्फ़ा या'नी ख़तना की खाल भी वहां मौजूद होगी। अगर्चे येह बच्चा मां बाप दोनों को जन्नत में ले जाएगा मगर मां का ज़िक्र ख़ुसूसिय्यत से इस लिये फ़रमाया कि, मां को सदमा ज़ियादा होता है और सब्र कम।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 2, स. 517)

मां को ह़दीसे पाक में बयान कर्दा फ़ज़ीलत उसी वक़्त मिलेगी जब वोह जज़अ़ फ़ज़अ़ न करे और सवाब पर निगाह रखे।

(ماخوذ از اشعۃ اللمعات، ج۱، ص۷۶۰)

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सवाबे आख़िरत पर निगाह रखने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

## اَلْحَدِيْثُ السَّابِعُ وَالْعِشْرُوْنَ शहीद और क़र्ज़

| عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ | أَنَّ النَّبِيَّ | قَالَ |
|---|---|---|
| ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स से (रिवायत है) | कि नबी (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) (ने) | फ़रमाया |

| اَلْقَتْلُ | فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ |
|---|---|
| क़त्ल (किया जाना) | अल्लाह की राह में |

| يُكَفِّرُ | كُلَّ شَيْءٍ | اِلَّا | الدَّيْن |
|---|---|---|---|
| मिटा देता है | हर चीज़ (या'नी गुनाह) को | मगर (इ़लावा) | क़र्ज़ (के) |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र व बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है, कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि, अल्लाह तआ़ला की राह में क़त्ल किया जाना क़र्ज़ के इ़लावा हर गुनाह को मिटा देता है।

(صحیح مسلم، کتاب الامارۃ، باب من قتل فی سبیل اللہ... الخ، الحدیث ۱۸۸۶، ص ۱۰۴۷)

## वज़ाह़त :

राहे ख़ुदा में शहीद होना हर गुनाह का कफ़्फ़ारा बन जाता है सिवाए क़र्ज़ के, इमाम जलालुद्दीन सुयूती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने बयान किया कि समुन्दर के शहीद इस से मुस्तस्ना हैं कि उन की शहादत क़र्ज़ का भी कफ़्फ़ारा बन जाती है। (اشعۃ اللمعات، ج ۳، ص ۳۵۷)

क़र्ज़ से मुराद वोह क़र्ज़ है जिस का मुत़ा-लबा करने का ह़क़ बन्दे को हो ख़्वाह बीवी का दैन महर हो या किसी से लिया हुवा क़र्ज़ या मारी हुई अमानत या ग़स्ब किया हुवा माल कि येह ही बन्दों के हुक़ूक़ हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 422)

## फ़िक्रे मदीना :

आज आप ने क़र्ज़ होने की सूरत में (बा वुजूदे इस्तिताअ़त) क़र्ज़ ख़्वाह की इजाज़त के बिग़ैर क़र्ज़ की अदाएगी में ताख़ीर तो नहीं की ? नीज़ किसी से आ़रियतन (आ़रिज़ी तौ़र पर अगर ली हो तो) ली हुई चीज़ ज़रूरत पूरी होने पर मुक़र्ररा मुद्दत के अन्दर वापस कर दी ?

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्तफ़ा** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें क़र्ज़ की अदाएगी जल्द से जल्द करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमारी बे हि़साब मग़्फ़िरत फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा ।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰلہٖ وسلَّم

## اَلْحَدِیْثُ الثَّامِنُ وَالْعِشْرُوْنَ शहादत की त़लब

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَنْ سَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ | اَنَّ | النَّبِیَّ | قَالَ |
| सह्ल बिन हुनैफ़ से (रिवायत है) | बेशक | अल्लाह के रसूल (ने) | फ़रमाया |

| | | | |
|---|---|---|---|
| مَنْ | سَأَلَ | اللّٰهَ | الشَّهَادَةَ |
| जो | सुवाल करता है | अल्लाह तआ़ला (से) | शहादत (का) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| بِصِدْقٍ مِنْ قَلْبِهٖ | بَلَّغَهٗ | اللّٰهُ | مَنَازِلَ |
| सच्चे दिल से | पहुंचा देता है उस (बन्दे) को | अल्लाह तआ़ला | मर्तबे तक |

| | | | |
|---|---|---|---|
| الشُّهَدَآءِ | وَاِنْ | مَّاتَ | عَلٰى فِرَاشِهٖ |
| शहीदों (के) | अगर्चे | मरे वोह बन्दा | अपने बिस्तर पर |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते सह्ल बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआ़ला से सच्चे दिल से शहादत त़लब करे तो अल्लाह तआ़ला उसे शहीद का मर्तबा अ़त़ा फ़रमा देता है, अगर्चे वोह अपने बिस्तर पर मरे।

(سنن ابن ماجہ، کتاب الجہاد، باب فضل القتال فی سبیل اللہ، الحدیث ۲۷۹۷، ج ۳، ص ۳۵۹)

## वज़ाह़त :

इस त़रह़ कि दिल से शहादत की आरज़ू करे, ज़बान से दुआ़ करे और ब क़द्रे त़ाक़त जिहाद की तय्यारी करे, मौक़ए़ की ताक में रहे, सिर्फ़ सच्ची दुआ़ को भी बा'ज़ शारिह़ीन ने इसी में

दाख़िल फ़रमाया है। शहादत का मर्तबा इस त़रह़ अ़त़ा होगा कि येह हुक्मी शहीद होगा, जो जन्नत में शु-हदा के साथ रहेगा। रब तआ़ला की अ़त़ा हमारे वह्मो गुमान से वरा है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 423)

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें शहादत की मौत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

## اَلْحَدِيْثُ التَّاسِعُ وَالْعِشْرُوْنَ क़ब्रों की ज़ियारत

| | | | |
|---|---|---|---|
| رَسُوْلُ اللّٰهِ | قَالَ | قَالَ | عَنْ بُرَيْدَةَ |
| अल्लाह के रसूल (ने) | फ़रमाया | कहा (उन्हों ने) | ह़ज़रते बुरैदा से (रिवायत है) |

| | | |
|---|---|---|
| فَزُوْرُوْهَا | عَنْ زِيَارَةِالْقُبُوْرِ | نَهَيْتُكُمْ |
| तो (अब) ज़ियारत करो इन की | क़ब्रों की ज़ियारत से | मैं ने मन्अ़ किया था तुम सब को |

**बा मुह़ा–वरा तरजमा :** ह़ज़रते बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं ने तुम लोगों को क़ब्रों की ज़ियारत से मन्अ़ किया था (अब मैं तुम्हें इजाज़त देता हूं कि) इन की ज़ियारत करो।

(صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب استئذان النبی ربہ فی... الخ، الحدیث ۱۰۶، ص ۴۸۶)

### वज़ाह़त :

शुरूए इस्लाम में ज़ियारते क़ुबूर मुसल्मान मर्दों औ़रतों को मन्अ़ थी क्यूं कि लोग नए नए इस्लाम लाए थे अन्देशा था कि (साबिक़ा ज़िन्दगी में) बुत परस्ती के आ़दी होने की वजह से अब क़ब्र परस्ती शुरूअ़ कर दें। जब उन में इस्लाम रासिख़ हो गया तो येह मुमा–न–अ़त मन्सूख़ हो गई, जैसे जब शराब ह़राम हुई तो शराब के बरतन इस्ति'माल करना भी मम्नूअ़ हो गया ता कि लोग बरतन देख कर फिर शराब याद न कर लें, जब लोग तर्के शराब के आ़दी हो गए तो बरतनों के इस्ति'माल की मुमा–न–अ़त मन्सूख़ हो गई।

क़ब्रों की ज़ियारत का येह हुक्म इस्तिह़बाबी है। ह़क़ येह है

कि इस हुक्म में औ़रतें भी शामिल हैं कि उन्हें भी ज़ियारते क़ुबूर की इजाज़त दी गई। लेकिन अब औ़रतों को ज़ियारते क़ुबूर से रोका जाए या'नी घर से ज़ियारते क़ुबूर के लिये न निकलें सिवाए रौज़ए अत़हर हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की (ज़ियारत के लिये), हां अगर कहीं जा रही हों और रास्ते में क़ब्र वाक़ेअ़ हो तो ज़ियारत कर लें जैसा कि ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की क़ब्र की ज़ियारत की, और अगर किसी घर में ही इत्तिफ़ाक़न क़ब्र वाक़ेअ़ हो तो ज़ियारत कर सकती हैं, ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के घर में हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्र शरीफ़ थी जहां आप मुजा-वरा व मुन्तज़िमा थीं। ख़याल रहे ह़दीसे पाक में ''زُوْرُوْا (या'नी ज़ियारत करो)'' मुत़्लक़ हुक्म है लिहाज़ा मुसल्मानों को ज़ियारते क़ब्र के लिये सफ़र भी जाइज़ है। जब हस्पताल और ह़कीमों के पास सफ़र कर के जा सकते हैं तो मज़ाराते औलिया पर भी सफ़र कर के जा सकते हैं कि इन की क़ुबूर रूह़ानी हस्पताल हैं, नीज़ अगर कहीं क़ब्र पर लोग ना जाइज़ ह़-र-कतें करते हों तो इस से ज़ियारते क़ुबूर न छोड़े, हो सके तो उन ह़-र-कतों को बन्द करे। देखो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हिजरत से पहले बुतों की वजह से का'बा न छोड़ा बल्कि जब मौक़अ़ा मिला तो बुत निकाल दिये। आज भी निकाह़ में लोग ना जाइज़ ह़-र-कतें करते हैं मगर इस की वजह से न निकाह़ बन्द किये जाते हैं न वहां की शिर्कत, निकाह़ भी सुन्नते मुत़्लक़ा है और ज़ियारते क़ुबूर भी सुन्नते मुत़्लक़ा, निकाह़ व ज़ियारते क़ुबूर दोनों के लिये सफ़र भी दुरुस्त है और ना जाइज़ उमूर की वजह से इन में शिर्कत मम्नूअ़ नहीं।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 522)

सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्तरीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى लिखते हैं कि औ़रतों के लिये बा'ज़ उ़-लमा ने ज़ियारते क़ुबूर को जाइज़ बताया, दुर्रे मुख़्तार में येह क़ौल इख़्तियार किया, मगर अ़ज़ीज़ों की क़ुबूर पर जाएंगी तो जज़अ़ फ़ज़अ़ करेंगी, लिहाज़ा मम्नूअ़ है और सालिह़ीन की क़ुबूर पर ब-र-कत के लिये जाएं तो बूढ़ियों के लिये ह़रज नहीं और जवानों के लिये मम्नूअ़। और अस्लम (या'नी सलामती की राह) येह है कि औ़रतें मुत़्लक़न मन्अ़ की जाएं कि अपनों की क़ुबूर की ज़ियारत में तो वोही जज़अ़ फ़ज़अ़ है और सालिह़ीन की क़ुबूर पर या ता'ज़ीम में ह़द से गुज़र जाएंगी या बे अ-दबी करेंगी कि औ़रतों में येह दोनों बातें ब कसरत से पाई जाती हैं। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 198)

**दुआ़ :**

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ क़ब्रों की ज़ियारत की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

# ईसाले सवाब

اَلْحَدِیْثُ الثَّلَاثُوْنَ

| | | |
|---|---|---|
| عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ | قَالَ | يَارَسُوْلَ اللّٰهِ! |
| ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा से (रिवायत है) | कहा (उन्हों ने) | या रसूलल्लाह ! |

| | | | |
|---|---|---|---|
| اِنَّ | أُمَّ سَعْدٍ | مَاتَتْ | فَاَیُّ |
| बेशक | सा'द की मां का | इन्तिक़ाल हो गया | तो कौन सा |

| | | | |
|---|---|---|---|
| الصَّدَقَةِ | أَفْضَلُ | قَالَ | الْمَآءُ |
| स-दक़ा | अफ़्ज़ल है ? | फ़रमाया (अल्लाह के रसूल ने) | पानी (अफ़्ज़ल है) |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| فَحَفَرَ | بِئْرًا | وَقَالَ | هٰذِهٖ | لِاُمِّ سَعْدٍ |
| खुदवाया | एक कूंआं | और फ़रमाया (ह़ज़रते सा'द ने) | येह | सा'द की मां के लिये (है) |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि उन्हों ने सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की, कि उम्मे सा'द (या'नी मेरी मां) का इन्तिक़ाल हो गया है उन के लिये कौन सा स-दक़ा अफ़्ज़ल है ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, पानी। (बेहतरीन स-दक़ा है तो ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कहने के मुत़ाबिक़) ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कूंआं खुदवाया और (उसे अपनी मां की त़रफ़ मन्सूब करते हुए) कहा येह कूंआं सा'द की मां के लिये है। (या'नी इस का सवाब उन को पहुंचे।)

(سنن ابی داود، کتاب الزکاۃ، باب فی فضل سقی الماء، الحدیث ۱۶۸۱، ج ۲، ص ۱۸۰)

## वज़ाह़त :

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इस सुवाल "कौन सा स-दक़ा अफ़्ज़ल है ?" का मत़लब येह है कि मैं कौन सा

स-दक़ा दे कर उन की रूह को इस का सवाब बख़्शूं। इस से मा'लूम हुवा कि बा'दे वफ़ात मय्यित को नेक आ'माल ख़ुसूसन माली स-दक़े का सवाब बख़्शना सुन्नत है। क़ुरआने करीम से तो यहां तक साबित है कि नेकों की ब-र-कत से बुरों की आफ़तें भी टल जाती हैं, रब तआ़ला फ़रमाता है وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन का बाप नेक आदमी था)। (پ۱۶،سورۃ الکہف:۸۲)

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाबन पानी की ख़ैरात का हुक्म दिया। क्यूं कि पानी से दीनी दुन्यवी मनाफ़ेअ़ ह़ासिल होते हैं। बा'ज़ लोग सबीलें लगाते हैं आ़म मुसल्मान ख़त्मे फ़ातिह़ा वग़ैरा में दूसरी चीज़ों के साथ पानी भी रख देते हैं इन सब का माख़ज़ येह ह़दीस है। इस ह़दीस से येह भी मा'लूम हुवा कि ईसाले सवाब के अल्फ़ाज़ ज़बान से अदा करना सुन्नते सह़ाबा है कि ख़ुदाया इस का सवाब फ़ुलां को पहुंचे।

(माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 104, 105)

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा **मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "मग़्मूम मुर्दा" से ईसाले सवाब के म-दनी फूल :

(1) फ़र्ज़, वाजिब, सुन्नत, नफ़्ल, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, ह़ज वग़ैरा हर इ़बादत (नेक काम) का ईसाले सवाब कर सकते हैं।

(2) मय्यित का तीजा, दसवां, चालीसवां, बरसी करना अच्छा है कि येह ईसाले सवाब के ज़राएअ़ हैं। शरीअ़त में तीजे वग़ैरा के अ़-दमे जवाज़ की दलील न होना ख़ुद दलीले जवाज़ है और मय्यित के लिये ज़िन्दों का दुआ़ करना ख़ुद क़ुरआने पाक से साबित है जो कि ईसाले सवाब की अस्ल है।

चुनान्चे इर्शाद होता है : وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْلَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَان **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जो उन के बा'द आए अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! हमें बख़्श दे और हमारे भाइयों को जो हम से पहले ईमान लाए। (پ۲۸،الحشر:۱۰)

(3) तीजे वग़ैरा में खाने का इन्तिज़ाम सिर्फ़ उसी सूरत में मय्यित के छोड़े हुए माल से कर सकते हैं जब कि सारे वु-रसा बालिग़ हों और सब के सब इजाज़त भी दें। अगर एक भी वारिस ना बालिग़ है तो नहीं कर सकते (ना बालिग़ इजाज़त दे तब भी नहीं कर सकते)। हां बालिग़ अपने हिस्से से कर सकता है।

(4) मय्यित के घर वाले अगर तीजे का खाना पकाएं तो सिर्फ़ फ़ु-क़रा को खिलाएं।

(5) ना बालिग़ बच्चे को भी ईसाले सवाब कर सकते हैं जो ज़िन्दा हैं उन को भी, बल्कि जो मुसल्मान अभी पैदा नहीं हुए उन को भी पेशगी (एडवान्स में) ईसाले सवाब किया जा सकता है।

(6) मुसल्मान जिन्नात को भी ईसाले सवाब किया जा सकता है।

(7) ग्यारहवीं शरीफ़ और र-जबी शरीफ़ (या'नी 22 रजब को सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के कूंडे करना) वग़ैरा जाइज़ हैं। खीर कूंडे ही में खिलाना ज़रूरी नहीं दूसरे बरतन में भी खिला सकते हैं। उस को घर से बाहर भी ले जा सकते हैं।

(8) बुज़ुर्गों की फ़ातिहा के खाने को ता'ज़ीमन नज़्रो नियाज़ कहते हैं और येह नियाज़ तबर्रुक है इसे अमीर व ग़रीब सब खा सकते हैं।

(9) दास्ताने अ़जीब, शहज़ादे का सर, दस बीबियों की कहानी और जनाबे सय्यिदह की कहानी वग़ैरा सब मन घड़त क़िस्से हैं इन्हें हरगिज़ न पढ़ा करें । इसी त़रह़ एक पेम्फ़लेट बनाम वसिय्यत नामा लोग तक़्सीम करते हैं जिस में शैख़ अह़मद का ख़्वाब दर्ज है येह भी जा'ली है इस के नीचे मख़्सूस ता'दाद में छपवा कर बांटने की फ़ज़ीलत और न तक़्सीम करने के नुक़्सानात वग़ैरा लिखे हैं येह भी सब ग़लत़ हैं ।

(10) जितनों को भी ईसाले सवाब करें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उम्मीद है कि सब को पूरा मिलेगा येह नहीं कि सवाब तक़्सीम हो कर टुकड़े टुकड़े मिले ।

(11) ईसाले सवाब करने वाले के सवाब में कोई कमी वाक़ेअ़ नहीं होती बल्कि येह उम्मीद है कि इस ने जितनों को ईसाले सवाब किया उन सब के मज्मूए़ के बराबर मिलेगा म-सलन कोई नेक काम किया जिस पर इस को दस नेकियां मिलीं अब इस ने दस मुर्दों को ईसाले सवाब किया तो हर एक को दस दस नेकियां पहुंचेंगी जब कि ईसाले सवाब करने वाले को एक सो दस और अगर एक हज़ार को ईसाले सवाब किया तो इस को दस हज़ार दस । وَعَلٰی هٰذَاالْقِيَاس

(12) ईसाले सवाब सिर्फ़ मुसल्मान को कर सकते हैं ।

(मग़्मूम मुर्दा, स. 11)

## फ़िक्रे मदीना :

क्या आज आप ने नमाज़ और दुआ़ के दौरान खुशूओ़ खुज़ूअ़ (खुशूअ़ या'नी बदन में आ़जिज़ी और खुज़ूअ़ या'नी दिल में गिड़-गिड़ाने की कैफ़िय्यत) पैदा करने की कोशिश फ़रमाई ? नीज़ दुआ़ में हाथ उठाने के आदाब का लिहाज़ रखा ?

(72 म-दनी इन्आ़मात, स. 13)

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्तफ़ा** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें नेकियां करने और उन का सवाब फ़ौत शुदा मुसल्मानों को ईसाल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** उम्मते महबूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा ।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

## اَلْحَدِیْثُ الْحَادِی وَالثَّلَاثُوْنَ दुन्या की बेहतरीन मताअ़

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو | اَنَّ | رَسُوْلَ اللّٰهِ | قَالَ اِنَّ |
| ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र से (रिवायत है) | बेशक | अल्लाह के रसूल (ने) | फ़रमाया बेशक |

| | | |
|---|---|---|
| الدُّنْيَا كُلَّهَا | مَتَاعٌ | وَّ |
| सारी दुन्या | मताअ़ (या'नी क़ाबिले इस्तिफ़ादा चीज़) है | और |

| | |
|---|---|
| خَيْرُ مَتَاعِ الدُّنْيَا | اَلْمَرْءَةُ الصَّالِحَةُ |
| दुन्या की बेहतरीन मताअ़ | नेक औ़रत (बीवी) है |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि, सारी दुन्या एक मताए ज़िन्दगी है और दुन्या की बेहतरीन मताअ़ नेक औ़रत है। (سنن النسائی، کتاب النکاح، باب المرأۃ الصالحۃ، ج٦، ص٦٩)

**वज़ाह़त :**

इन्सान दुन्या को बरत कर छोड़ जाता है रब तआ़ला फ़रमाता है "قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ" तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमा दो कि दुन्या का बरत्ना थोड़ा है।" (پ٥، النساء٧٧)

सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं, अगर दुन्या दीन से मिल जाए तो ला ज़वाल दौलत है क़त्रे को हज़ार ख़त्रे हैं दरिया से मिल जाए तो रवानी तुग़्यानी सब कुछ इस में आ जाती है और ख़त्रात से बाहर हो जाता है।

औ़रत को बेहतरीन मताअ़ इस लिये फ़रमाया गया कि नेक बीवी मर्द को नेक बना देती है, वोह उख़्वी ने'मतों से है ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने "رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً" की तफ़्सीर में

फ़रमाया (या'नी) ख़ुदाया हम को दुन्या में नेक बीवी दे और आख़िरत में आ'ला हूर अ़ता फ़रमा और आग ''या'नी ख़राब बीवी'' के अ़ज़ाब से बचा। जैसे अच्छी बीवी ख़ुदा की रह़मत है ऐसी ही बुरी बीवी ख़ुदा का अ़ज़ाब है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 4)

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

اَلْحَدِيْثُ الثَّانِي وَالثَّلَاثُوْنَ

# महर

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ | قَالَ | قَالَ | رَسُوْلُ اللّٰهِ |
| ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर से (रिवायत है) | | कहा (उन्हों ने) | अल्लाह के रसूल (ने) |

| | | |
|---|---|---|
| أَحَقُّ الشُّرُوْطِ | أَنْ تُوَفُّوْا بِهٖ | مَا |
| शराइत़ में से अहम तरीन येह है | कि तुम पूरा करो | वोह शर्त़ (या'नी महर) |

| | |
|---|---|
| اسْتَحْلَلْتُمْ بِهِ | الْفُرُوْجَ |
| जिस के ज़रीए़ तुम ने ह़लाल किया | शर्मगाहों को |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم عَزَّ وَجَلَّ के रसूल ने फ़रमाया : (निकाह़ की) शर्तों में से जिस शर्त़ का पूरा करना तुम्हारे लिये सब से ज़ियादा अहम है वोह वोही शर्त़ है जिस के ज़रीए़ तुम ने औ़रतों की शर्मगाहों को अपने लिये ह़लाल किया है।

(صحیح البخاری، کتاب الشروط، باب الشروط فی المھر ...الخ، الحدیث ۲۷۲۱، ج ۲، ص ۲۲۰)

## वज़ाह़त :

इस शर्त़ से मुराद मह्र है या बीवी का नान व न-फ़क़ा वग़ैरा मगर ह़क़ येह है कि इस से मुराद तमाम वोह जाइज़ शर्तें हैं जो निकाह़ से पहले या निकाह़ के वक़्त लगाई जाएं। यहां साह़िबे मिरक़ात ने फ़रमाया कि इस जगह ख़ावन्द बीवी दोनों से ख़ित़ाब है या'नी निकाह़ के वक़्त जो शर्तें औ़रत की त़रफ़ से मर्द पर लगें उसे मर्द ज़रूर पूरा करे और जो शर्तें मर्द की त़रफ़ से औ़रत पर लगें उसे औ़रत ज़रूर पूरा करे। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 5, स. 33)

कम से कम महर दस दिरहम है (या'नी दो तोला साढ़े सात माशा तक़रीबन 30.618 ग्राम चांदी) रुपियों की सूरत में महर मुक़र्रर करना हो तो इस बात का ज़रूर ख़याल रखें कि येह रक़म दस दिरहम की क़ीमत से कम न हो। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 7, स. 56)

**महर की तीन क़िस्में हैं :**

**(1) मुअ़ज्जल (2) मुअज्जल (3) मुत़्लक़**

**(1) महरे मुअ़ज्जल :** वोह महर है कि ख़ल्वत से पहले देना क़रार पाया हो। महरे मुअ़ज्जल वुसूल करने के लिये औ़रत अपने को शोहर से रोक सकती है, अगर्चे इस से पेश्तर औ़रत की रिज़ा मन्दी से ख़ल्वत व वत़ी हो चुकी हो या'नी येह ह़क़ औ़रत को हमेशा ह़ासिल है जब तक वुसूल न कर ले।

**(2) महरे मुअज्जल :** वोह महर है कि जिस की अदाएगी के लिये कोई मीआ़द मुक़र्रर हो। महरे मुअज्जल में जब तक वोह मीआ़द न गुज़रे औ़रत को मुत़ा-लबे का इख़्तियार नहीं और मीआ़द पूरी होने के बा'द हर वक़्त मुत़ा-लबा कर सकती है, और अपने को शोहर से रोक सकती है।

**(3) महरे मुत़्लक़ :** वोह महर है कि न ख़ल्वत से पहले देना क़रार पाया हो और न कोई मीआ़द मुक़र्रर हो। महरे मुत़्लक़ में ता वक़्ते कि मौत या त़लाक़ हो औ़रत को मुत़ा-लबे का ह़क़ नहीं।

(बहारे शरीअ़त, महर का बयान, हिस्सा : 7, स. 66)

ख़ल्वते सह़ीह़ा येह है कि निकाह़ के बा'द औ़रत और मर्द तन्हाई में जम्अ़ हों और कोई चीज़ जिमाअ़ से मानेअ़ न हो, तो येह ख़ल्वत भी जिमाअ़ ही के ह़ुक्म में है। मवानेए़ जिमाअ़ तीन हैं :

**मानेए़ शर-ई :** म-सलन औ़रत का हैज़ व निफ़ास में होना। या इन में से किसी का र-मज़ान का रोज़ादार होना।

**मानेए़ ह़िस्सी :** म-सलन मर्द का बीमार होना या औ़रत का इस ह़द तक बीमारी में मुब्तला होना कि वत़ी से ज़रर का सह़ीह़ अन्देशा हो।

**मानेए़ त़ब्ई :** म-सलन वहां कोई तीसरा मौजूद हो।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 7, स. 60)

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

# اَلْحَدِیْثُ الثَّالِثُ وَالثَّلَاثُوْنَ शोहर की इताअ़त

| قَالَ | عَنِ النَّبِیِّ | عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ |
|---|---|---|
| फ़रमाया | नबी से | ह़ज़रते अबू हुरैरा (रिवायत करते हैं) |

| لِاَحَدٍ | اَنْ یَّسْجُدَ | كُنْتُ اٰمِرًا اَحَدًا | لَوْ |
|---|---|---|---|
| किसी को | कि वोह सज्दा करे | मैं हुक्म देता किसी को | अगर |

| لِزَوْجِهَا | اَنْ تَسْجُدَ | الْمَرْاَةَ | لَاَمَرْتُ |
|---|---|---|---|
| अपने शोहर को | कि सज्दा करे वोह (औ़रत) | औ़रत (को) | तो मैं ज़रूर हुक्म देता |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि, अगर मैं किसी को हुक्म देता कि वोह अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी (दूसरे) को सज्दा करे तो औ़रत को ज़रूर हुक्म देता कि वोह अपने शोहर को सज्दा करे।

(جامع الترمذی، کتاب الرضاع، باب ماجاء فی حق الزوج، الحدیث۱۱۶۲، ج۲، ص۳۸۶)

## वज़ाह़त :

सज्दए इबादत कुफ़्र है और सज्दए ता'ज़ीम ह़राम, दूसरी शरीअ़तों में बन्दों को सज्दए ता'ज़ीम जाइज़ था। इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मालिके अह़काम हैं जभी तो फ़रमाते हैं कि अगर मैं किसी को सज्दे का हुक्म देता। येह भी मा'लूम हुवा कि ख़ावन्द के हुक़ूक़ बहुत ज़ियादा हैं और औ़रत इस के एह़सानात के शुक्रिये से आ़जिज़ है इसी लिये ख़ावन्द ही इस के सज्दे का मुस्तह़िक़ होता। ख़ावन्द की इताअ़त व ता'ज़ीम अशद

ज़रूरी है इस की हर जाइज़ ता'ज़ीम की जाए।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 5, स. 97)

एक और ह़दीस में सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, औरत जब पांचों नमाज़ें पढ़े, और माहे र-मज़ान के रोज़े रखे और अपनी इफ़्फ़त की मुह़ा-फ़-ज़त करे और शोहर की इत़ाअ़त करे तो जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो।

(حلیۃ الاولیاء، الربیع بن صبیح، الحدیث ۸۸۳۰، ج ۶، ص ۳۳۶)

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## जन्नती औरत

اَلْحَدِيْثُ الرَّابِعُ وَالثَّلَاثُوْن

| رَسُوْلُ اللّٰهِ | قَالَ | قَالَتْ | عَنْ اُمِّ سَلْمَةَ |
|---|---|---|---|
| अल्लाह के रसूल (ने) | फ़रमाया | कहा (उन्हों ने) | ह़ज़रते उम्मे स-लमह से (रिवायत है) |

| زَوْجُهَا | وَ | مَاتَتْ | اَيُّمَاامْرَاَةٍ |
|---|---|---|---|
| उस (औ़रत) का शोहर | इस ह़ाल में कि | मर जाए | जो कोई औ़रत |

| اَلْجَنَّةَ | دَخَلَتِ | رَاضٍ | عَنْهَا |
|---|---|---|---|
| जन्नत में | दाख़िल होगी (वोह औ़रत) | राज़ी हो | उस (औ़रत) से |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि, जो औ़रत इस ह़ाल में इन्तिक़ाल करे कि उस का शोहर उस से राज़ी और ख़ुश हो तो वोह औ़रत जन्नती है।

(مشکوٰۃ المصابیح،کتاب النکاح،باب عشرۃ النساء،الحدیث۳۲۵۶،ج۱،ص۵۹۷)

**वज़ाह़त :**

यहां ख़ावन्द से मुराद मुसल्मान आ़लिम मुत्तक़ी ख़ावन्द है। येह क़ुयूद बहुत ही मुनासिब हैं क्यूं कि बा'ज़ बे दीन ख़ावन्द तो औ़रत की नमाज़ से नाराज़ होते हैं उस के गाने बजाने, सिनेमा जाने, बे पर्दा फिरने से राज़ी होते हैं येह रिज़ा बे ईमानी है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 97)

जिस त़रह़ औ़रत पर शोहर के ह़ुक़ूक़ हैं इसी त़रह़ शोहर पर भी औ़रत के ह़ुक़ूक़ हैं जिन के मु-तअ़ल्लिक़ एक ह़दीसे पाक में इर्शाद हुवा : जब तुम खाओ तो उसे खिलाओ, जब तुम पहनो तो उसे

पहनाओ और अगर किसी ख़िलाफ़े शर-अ़ बात पर सज़ा देनी हो तो उस के मुंह पर न मारो और उसे बुरा न कहो और उसे न छोड़ो मगर घर में। (سنن ابی داود، کتاب النکاح، باب فی حق مراۃ... الخ، الحدیث ۲۱۴۲، ج ۲، ص ۳۵۵)

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

# पर्दा

اَلْحَدِيْثُ الْخَامِسُ وَالثَّلَاثُوْنَ

| عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ | عَنِ النَّبِیِّ | قَالَ |
|---|---|---|
| ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द (रिवायत करते हैं) | नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से | फ़रमाया |

| اَلْمَرْءَةُ | عَوْرَةٌ | فَاِذَا |
|---|---|---|
| औ़रत | पर्दे में रखने की चीज़ है | तो जब |

| خَرَجَتِ | اِسْتَشْرَفَهَا | الشَّيْطَانُ |
|---|---|---|
| वोह (औ़रत) निकलती है | निगाह उठा कर देखता है उस (औ़रत) को | शैत़ान |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि, औ़रत, औ़रत है या'नी पर्दे में रखने की चीज़ है जब वोह बाहर निकलती है तो शैत़ान उस को घूरता है।

(جامع الترمذی، کتاب النکاح، باب ۱۸، الحدیث ۱۱۷۶، ج۲، ص۳۹۲)

## वज़ाह़त :

औ़रत के मा'ना हैं ''مَا يُعَارُ فِیْ اِظْهَارِهٖ'' या'नी जिस का ज़ाहिर होना क़ाबिले आ़र व शर्म हो, औ़रत का बे पर्दा रहना मैके वालों के लिये भी नंगो शर्म है और सुसराल वालों के लिये भी। استشراف के मा'ना हैं ''किसी चीज़ को बग़ौर देखना या इस के मा'ना हैं लोगों की निगाह में अच्छा कर देना ताकि लोग उसे बग़ौर देखें।'' औ़रत जब बे पर्दा होती है तो शैत़ान लोगों की निगाह में उसे भली कर देता है कि वोह ख़्वाह म ख़्वाह उसे तकते हैं, मसल मश्हूर है कि पराई औ़रत और अपनी औलाद अच्छी मा'लूम होती है और पराया माल और अपनी अ़क़्ल ज़ियादा मा'लूम होते हैं। सरकार

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान बिल्कुल देखने में आ रहा है बा'ज़ लोग अपनी ख़ूब सूरत बीवियों से मु-तनफ़्फ़िर होते हैं दूसरी बद सूरत औ़रतों पर फ़रेफ़्ता।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 16, 17)

आज़ाद औ़रतों के लिये मुंह की टिकली और दोनों हथेलियों और पाउं के तल्वों के सिवा सारा बदन औ़रत है। ग़ैर महरमों से इन आ'ज़ा के सिवा पूरा बदन छुपाना फ़र्ज़ है, बल्कि जवान औ़रत को ग़ैर मर्दों के सामने मुंह खोलना भी मन्अ़ है। सर के लटके हुए बाल और गरदन और कलाइयां भी औ़रत हैं इन का छुपाना भी फ़र्ज़ है।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 3, स. 48, 49)

**मदीना :** मज़ीद तफ़्सील के लिये शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की तालीफ़ ''पर्दे के बारे में सुवाल जवाब'' का मुत़ा-लआ़ कीजिये।

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## اَلْحَدِيْثُ السَّادِسُ وَالثَّلَاثُوْنَ औरत का मर्द को देखना ?

| | | | |
|---|---|---|---|
| عِنْدَ | كَانَتْ | أَنَّهَا | عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ |
| पास | थीं | बेशक वोह (उम्मे स-लमह) | ह़ज़रते उम्मे स-लमह से (रिवायत है कि) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| أَقْبَلَ | قَالَتْ | وَمَيْمُوْنَةُ | رَسُوْلِ اللّٰهِ |
| आए सामने से | कहा | और मैमूना (भी थीं) | अल्लाह के रसूल (के) |

| | |
|---|---|
| فَدَخَلَ عَلَيْهِ وَذٰلِكَ بَعْدَمَا أُمِرْنَا بِالْحِجَابِ | ابْنُ أُمِّ مَكْتُوْمٍ |
| सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उस वक़्त हमें (या'नी औरतों को) पर्दे का हुक्म मिल चुका था | उम्मे मक्तूम के बेटे (और) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| فَقُلْتُ | مِنْهُ | اِحْتَجِبَا | قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهُ |
| तो मैं ने अ़र्ज़ की | इन से | पर्दा कर लो तुम दोनों | तो फ़रमाया अल्लाह के रसूल ने |

| | | | |
|---|---|---|---|
| هُوَ | لَيْسَ | أَ | يَارَسُوْلَ اللّٰهِ |
| येह (इब्ने उम्मे मक्तूम) | नहीं (हैं) | क्या | ऐ अल्लाह के रसूल (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) |

| | | |
|---|---|---|
| فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ | لَايُبْصِرُنَاوَلَا يَعْرِفُنَا | أَعْمٰى |
| तो फ़रमाया अल्लाह के रसूल ने | न देख पाएं, न हमें जान पाएं | नाबीना |

| | | |
|---|---|---|
| تُبْصِرَانِهٖ | وَاِنْ أَنْتُمَا لَسْتُمَا | أَفَعُمْيَا؟ |
| देखती हो इन को | और क्या तुम दोनों नहीं | क्या तुम दोनों भी नाबीना हो ? |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि मैं और ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर थीं कि (एक नाबीना सह़ाबी) ह़ज़रते इब्ने उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ सामने से हुज़ूर عَزَّوَجَلَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आ रहे थे तो अल्लाह

के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (हम दोनों से) फ़रमाया कि, पर्दा कर लो। (ह़ज़रते उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाती हैं कि) मैं ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या वोह नाबीना नहीं हैं ? वोह हमें नहीं देख सकेंगे। सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम दोनों भी नाबीना हो क्या तुम उन्हें नहीं देखोगी ?

(جامع الترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی احتجاب النساء من الرجال، الحدیث ۲۷۸۷، ج ۴، ص ۳۵۶)

## वज़ाह़त :

औ़रत व मर्द पर दो त़रफ़ा पर्दा वाजिब है कि न तो मर्द अजनबी औ़रत को देखे न अजनबी औ़रत मर्द को। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 20) औ़रत का अजनबी मर्द की त़रफ़ नज़र करने का वोही हुक्म है जो मर्द का मर्द की त़रफ़ नज़र करने का है या'नी नाफ़ के नीचे से घुटने तक नहीं देख सकती बाक़ी आ'ज़ा की त़रफ़ नज़र कर सकती है बशर्ते कि औ़रत को यक़ीन के साथ मा'लूम हो कि उस की त़रफ़ नज़र करने से शह्वत पैदा नहीं होगी और अगर शह्वत का मा'मूली सा शुबा भी हो तो नज़र नहीं कर सकती, नज़र करेगी तो गुनहगार होगी।

(इस्लामी अख़्लाक़ व आदाब, स. 96) (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 76)

## दुआ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## اَلْحَدِيْثُ السَّابِعُ وَالثَّلَاثُوْنَ अज्नबिया औ़रत के साथ तन्हाई ?

| عَنْ عُمَرَ | عَنِ النَّبِيِّ قال |
|---|---|
| ह़ज़रते उ़मर | नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया |

| لَا يَخْلُوَنَّ | رَجُلٌ | بِامْرَأَةٍ |
|---|---|---|
| हरगिज़ तन्हा नहीं होगा | कोई मर्द | किसी औ़रत के साथ |

| اِلَّا كَانَ | ثَالِثُهُمَا | الشَّيْطَانُ |
|---|---|---|
| मगर होता है | उन में तीसरा | शैत़ान |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि अल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रसूल عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया कि, कोई मर्द किसी अज्नबिया औ़रत के साथ तन्हाई में जम्अ़ नहीं होता लेकिन इस ह़ाल में कि वहां दो के इ़लावा तीसरा शैत़ान भी होता है । (جامع الترمذی، کتاب الرضاع، باب ماجاء فی کراھیۃ الدخول علی المغیبات، الحدیث ۱۱۷۴، ج ۲، ص ۳۹۱)

**वज़ाह़त :**

जब कोई शख़्स अजनबी औ़रत के साथ तन्हाई में होता है ख़्वाह दोनों कैसे ही पाकबाज़ हों और किसी मक़्सद के लिये जम्अ़ हों शैत़ान दोनों को बुराई पर ज़रूर उभारता है और दोनों के दिलों में ज़रूर हैजान पैदा करता है ख़त़रा है कि ज़िना वाक़ेअ़ करा दे इस लिये ऐसी ख़ल्वत से बहुत एह़तियात़ चाहिये, गुनाह के अस्बाब से भी बचना चाहिये, बुख़ार रोकने के लिये नज़्ला व ज़ुकाम रोको ।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 21)

अज्नबिया औ़रत के साथ ख़ल्वत या'नी दोनों का एक

मकान में तन्हा होना ह़राम है, हां अगर वोह बिल्कुल बूढ़ी औ़रत है कि शह्वत के क़ाबिल नहीं तो ख़ल्वत हो सकती है। महारिम के साथ ख़ल्वत जाइज़ है या'नी दोनों एक मकान में तन्हा हो सकते हैं मगर रिज़ा-ई बहन और सास के साथ तन्हाई जाइज़ नहीं जब कि येह जवान हों। येही हुक्म अपनी औ़रत की जवान लड़की का है जो दूसरे शोहर से है।

(इस्लामी अख़्लाक़ व आदाब, स. 102) (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 81)

## दुआ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

## اَلْحَدِیْثُ الثَّامِنُ وَالثَّلَاثُوْنَ ना पसन्दीदा चीज़

| عَنِ ابْنِ عُمَرَ | أَنَّ النَّبِیَّ | قَالَ |
|---|---|---|
| ह़ज़रत (अ़ब्दुल्लाह) इब्ने उ़मर से (रिवायत है) | कि नबी (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने) | फ़रमाया |

| أَبْغَضُ | الْحَلَالِ | اِلَی اللّٰہِ تَعَالٰی | الطَّلَاقُ |
|---|---|---|---|
| ज़ियादा ना पसन्दीदा | ह़लाल | अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक | त़लाक़ (है) |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि, तमाम ह़लाल चीज़ों में ख़ुदा तआ़ला के नज़्दीक सब से ना पसन्दीदा चीज़ त़लाक़ है।

(سنن ابی داود، کتاب الطلاق، باب کراھیۃ الطلاق، الحدیث ۲۱۷۸، ج۲، ص۳۷۰)

### वज़ाह़त :

निकाह़ से औ़रत शोहर की पाबन्द हो जाती है इस पाबन्दी के उठा देने को त़लाक़ कहते हैं।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 8, स. 5)

अल्लाह तआ़ला ने बन्दों के लिये ज़रूरत की बिना पर त़लाक़ मुबाह़ तो कर दी है मगर रब तआ़ला को पसन्द नहीं कि इस में दो मह़बूबों की जुदाई घर बिगड़ना औलाद की तबाही है ग़रज़ कि बिला वजह त़लाक़ कराहत से ख़ाली नहीं, बहुत सी चीज़ें ह़लाल हैं मगर बेहतर नहीं जैसे बिला उ़ज़्र मर्द का घर में नमाज़ पढ़ लेना वग़ैरा। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 112)

**मस्अला :** त़लाक़ (ब ए'तिबारे ह़ुक्म व नतीजा) तीन क़िस्म है।

(1) रज्ई (2) बाइन (3) मुग़ल्लज़ा

**(1) रज्ई :** वोह जिस से औ़रत फ़िलहाल निकाह़ से नहीं निकलती, इद्दत के अन्दर शोहर रज्अ़त कर सकता है ख़्वाह औ़रत राज़ी हो या न हो। हां अगर इद्दत गुज़र जाए और रज्अ़त न करे तो उस वक़्त निकाह़ से निकलेगी, मगर शोहर फिर भी औ़रत की मरज़ी से निकाह़ कर सकता है, ह़लाला की ज़रूरत नहीं।

**(2) बाइन :** वोह जिस से औ़रत फ़िलफ़ौर निकाह़ से निकल जाती है। औ़रत की मरज़ी से शोहर इद्दत के अन्दर निकाह़ कर सकता है और इद्दत के बा'द भी। ह़लाला की ज़रूरत नहीं।

**(3) मुग़ल्लज़ा :** वोह कि औ़रत फ़ौरन निकाह़ से निकल भी गई और अब औ़रत बिग़ैर ह़लाला शोहरे अव्वल के लिये जाइज़ न होगी। (माख़ूज़ अज़ अन्वारुल हदीस, स. 326, 327, बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 8, स. 5)

**मस्अला :** अगर औ़रत ह़ामिला हो तो भी त़लाक़ वाक़ेअ़ हो जाएगी। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 8, स. 5)

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

## اَلْحَدِيْثُ التَّاسِعُ وَالثَّلَاثُوْنَ बिला वजह त़लाक़ मांगना

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَنْ ثَوْبَانَ | قَالَ | قَالَ | رَسُوْلُ اللّٰهِ |
| ह़ज़रते सौबान से (रिवायत है) | कहा (उन्हों ने) | फ़रमाया | अल्लाह के रसूल (ने) |

| | | |
|---|---|---|
| أَيُّمَاامْرأَةٍ | سَئَلَتْ | زَوْجَهَا |
| जो कोई औ़रत | सुवाल करे | अपने शोहर (से) |

| | | |
|---|---|---|
| طَلَاقًا | فِىْ غَيْرِمَابَاسٍ | فَحَرَامٌ |
| त़लाक़ (का) | बिग़ैर किसी वजह के | तो ह़राम (है) |

| | | |
|---|---|---|
| عَلَيْهَا | رَائِحَةُ | الْجَنَّةِ |
| उस (औ़रत) पर | ख़ुश्बू | जन्नत (की) |

**बा मुह़ा–वरा तरजमा :** ह़ज़रते सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रसूल عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया कि, जो औ़रत बिग़ैर किसी उ़ज़्रे मा'क़ूल के शोहर से त़लाक़ मांगे उस पर जन्नत की ख़ुश्बू ह़राम है। (سنن ابی داود، کتاب الطلاق، باب فی الخلع، الحدیث ۲۲۲۶، ج۲، ص۳۹۰)

**वज़ाह़त :**

यहां वोह औ़रत मुराद है जो बिग़ैर सख़्त तक्लीफ़ के त़लाक़ मांगे। ''ऐसी औ़रत का जन्नत में जाना तो क्या होगा वहां की ख़ुश्बू भी न पाएगी'' इस से मुराद है ऊला दाख़िला (या'नी अव्वलन ही जन्नत में दाख़िल होना) वरना आख़िरे कार सारे मोमिन जन्नत में पहुंचेंगे अगर्चे कैसे ही गुनाहगार हों।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 112)

अगर ज़ौज व ज़ौजा में ना इत्तिफ़ाक़ी रहती हो और येह अन्देशा हो कि अह़कामे शरइय्या की पाबन्दी न कर सकेंगे तो ऐसी सूरत में औ़रत की त़रफ़ से त़लाक़ के मुता़–लबे में कोई मुज़ा–यक़ा नहीं। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 8, स. 86)

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें म–दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें दा'वते इस्लामी के म–दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عليه واٰلهٖ وسلَّم

## इद्दत की मुद्दत

اَلْحَدِيْثُ الْاَرْبَعُوْنَ

| | | |
|---|---|---|
| عَنِ الْمِسْوَرِبْنِ مَخْرَمَةَ | أَنَّ سُبَيْعَةَ الْاَسْلَمِيَّةَ | نُفِسَتْ |
| ह़ज़रते मिस्वर बिन् मख़्रमा से (रिवायत है) | कि सुबैआ़ अस्लमिय्या (को) | निफ़ास आया (या'नी बच्चा जना) |

| |
|---|
| بَعْدَوَفَاةِزَوْجِهَابِلَيَالٍ |
| अपने शोहर (के) इन्तिक़ाल के कुछ अ़र्से बा'द |

| | | |
|---|---|---|
| فَجَاءَتِ | النَّبِيَّ صلى الله تعالى عليه وآله وسلم | فَاسْتَاذَنَتْهُ |
| तो आई वोह | नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (के पास) | और इजाज़त चाही उन्हों ने, सरकार से |

| | | |
|---|---|---|
| أَنْ تَنْكِحَ | فَأَذِنَ لَهَا | فَنَكَحَتْ |
| कि निकाह़ करें वोह | पस इजाज़त अ़ता की सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन को | तो निकाह़ किया उन्हों ने |

**बा मुह़ा-वरा तरजमा :** ह़ज़रते मिस्वर बिन मख़्रमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, कि सुबैआ़ अस्लमिय्या ने शोहर के इन्तिक़ाल के कुछ अ़र्से बा'द बच्चा जना तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई और निकाह़ की इजाज़त त़लब की ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन को इजाज़त दे दी तो उन्हों ने निकाह़ कर लिया। (صحیح البخاری، کتاب الطلاق، باب ۳۹، الحدیث ۵۳۲۰، ج ۳، ص ۵۰۳)

**वज़ाह़त :**

या'नी वोह ख़ातून ह़ामिला थीं अपने ख़ावन्द की वफ़ात के चन्द दिन बा'द बच्चा पैदा हो गया था निफ़ास आने से येही मुराद है। इस पर उम्मत का इज्माअ़ है कि ह़ामिला की इद्दत ह़म्ल जन देना है ख़्वाह मुत़ल्लक़ा हो या वफ़ात वाली, अगर्चे त़लाक़ या वफ़ात के एक मिनट बा'द ही बच्चा पैदा हो जाए। इस मस्अले का माख़ज़ येह ह़दीस है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 150)

शोहर के त़लाक़ देने या इस के वफ़ात पा जाने के बा'द

औरत का निकाह़ मम्नूअ़ होना और एक ज़मानए मुअ़य्यना तक इन्तिज़ार करना इस्ति़लाहे़ शरीअ़त में इद्दत कहलाता है।

**बेवा ह़ामिला :** बेवा ह़ामिला की इद्दत वज़्ए़ ह़म्ल है।

**बेवा ग़ैर ह़ामिला :** बेवा अगर ह़ामिला न हो तो उस की इद्दत चार महीने दस दिन है।

**मुत़ल्लक़ा ह़ामिला :** त़लाक़ वाली औरत अगर ह़ामिला हो तो उस की इद्दत वज़्ए़ ह़म्ल है।

**मुत़ल्लक़ा मदख़ूला ग़ैर ह़ामिला :** त़लाक़ वाली मदख़ूला औरत अगर आइसा या'नी पचपन सालह (जो सिने इयास को पहुंच चुकी या'नी अब हैज़ की उ़म्र न रही) या ना बालिग़ा (जिस को अभी हैज़ आया ही नहीं) हो तो उस की इद्दत तीन माह है।

और त़लाक़ वाली मदख़ूला औरत अगर ह़ामिला, ना बालिग़ा या आइसा न हो या'नी हैज़ वाली हो तो उस की इद्दत तीन हैज़ है, ख़्वाह येह तीन हैज़ तीन माह में या तीन साल में या इस से ज़ियादा में आएं। (अन्वारुल ह़दीस, स. 329)

**मुत़ल्लक़ा ग़ैर मदख़ूला :** त़लाक़ की इद्दत ग़ैर मदख़ूला पर अस्लन नहीं अगर्चे कबीरा हो। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 13, स. 293)

## दुआ़ :

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

# ماخذ ومراجع


| | | |
|---|---|---|
| (۱) | قرانِ پاک | مطبوعہ مرکز اہل سنت برکات رضا گجرات (ھند) |
| (۲) | ترجمۃ القران کنز الایمان | مطبوعہ مرکز اہل سنت برکات رضا گجرات (ھند) |
| (۳) | تفسیر خزائن العرفان | مطبوعہ مرکز اہل سنت برکات رضا گجرات (ھند) |
| (۴) | جامع الترمذی | مطبوعہ دار الفکر بیروت |
| (۵) | سنن ابن ماجہ | مطبوعہ دار المعرفہ بیروت |
| (۶) | سنن ابوداؤد | مطبوعہ دار احیاء التراث بیروت |
| (۷) | سنن نسائی | مطبوعہ دار الجیل بیروت |
| (۸) | مشکوٰۃ المصابیح | مطبوعہ دار الکتب بیروت |
| (۹) | الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان | مطبوعہ دار الکتب العلمیہ بیروت |
| (۱۰) | المعجم الکبیر للطبرانی | مطبوعہ دار الکتب العلمیہ بیروت |
| (۱۱) | المعجم الاوسط | مطبوعہ دار الفکر بیروت |
| (۱۲) | السنن الکبریٰ | مطبوعہ دار الکتب العلمیہ بیروت |
| (۱۳) | مسند امام احمد بن حنبل | مطبوعہ دار الفکر بیروت |
| (۱۴) | شعب الایمان | مطبوعہ دار الکتب العلمیہ بیروت |
| (۱۵) | الترغیب والترھیب | مطبوعہ دار الفکر بیروت |
| (۱۶) | المستدرک للحاکم | مطبوعہ دار المعرفہ بیروت |
| (۱۷) | نزھۃ القاری شرح صحیح بخاری | مطبوعہ فرید بک اسٹال لاہور |
| (۱۸) | شرح صحیح مسلم للنووی | مطبوعہ باب المدینہ کراچی |
| (۱۹) | مرقاۃ المفاتیح | مطبوعہ دار الفکر بیروت |
| (۲۰) | اشعۃ اللمعات شرح مشکوۃ | مطبوعہ کوئٹہ |
| (۲۱) | مراۃ المناجیح شرح مشکوۃ | مطبوعہ ضیاء القران پبلی کیشنز لاہور |
| (۲۲) | کتاب الضعفاء | مطبوعہ دار الصمیعی |
| (۲۳) | العلل المتناھیہ | مطبوعہ دار الکتب العلمیہ بیروت |
| (۲۴) | بہار شریعت | مطبوعہ مکتبہ رضویہ کراچی ومکتبۃ المدینہ |
| (۲۵) | رسائل نعیمیہ | مطبوعہ ضیاء القران پبلی کیشنز لاہور |
| (۲۶) | جاء الحق | مطبوعہ قادری پبلی کیشنز لاہور |
| (۲۷) | اسلامی اخلاق وآداب | مطبوعہ فرید بک اسٹال لاہور |
| (۲۸) | مغموم مردہ | مطبوعہ مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی |
| (۲۹) | ۷۲ مدنی انعامات | مطبوعہ مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی |

# मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा कुतुब व रसाइल

## ( शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ رَبِّ الۡعِزَّت )

## उर्दू कुतुब :

1...... अल मल्फ़ूज़ अल मा'रूफ़ बिह मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (ह़िस्सए अव्वल) (कुल सफ़ह़ात : 250)
2...... करन्सी नोट के शर–ई अह़कामात (كِفۡلُ الۡفَقِيۡهِ الۡفَاهِمِ فِيۡ اَحۡكَامِ قِرۡطَاسِ الدَّرَاهِمۡ) (कुल सफ़ह़ात : 199)
3...... दुआ के फ़ज़ाइल (اَحۡسَنُ الۡوِعَاءِ لِآدَابِ الدُّعَاءِ مَعَهٗ ذَيۡلُ الۡمُدَّعَا لِاَحۡسَنُ الۡوِعَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 326)
4...... वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (اَلۡحُقُوۡقُ لِطَرۡحِ الۡعُقُوۡقِ) (कुल सफ़ह़ात : 125)
5...... आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (اِظۡهَارُ الۡحَقِّ الۡجَلِيۡ) (कुल सफ़ह़ात : 100)
6...... ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)
7...... सुबूते हिलाल के त़रीक़े (طُرُقُ اِثۡبَاتِ هِلَالِ) (कुल सफ़ह़ात : 63)
8...... विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (اَلۡيَاقُوۡتَةُ الۡوَاسِطَةُ) (कुल सफ़ह़ात : 60)
9...... शरीअ़त व त़रीक़त (مَقَالُ الۡعُرَفَاءِ بِاِعۡزَازِ شَرۡعٍ وَعُلَمَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 57)
10...... ईदैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الۡجِيۡدِ فِيۡ تَحۡلِيۡلِ مُعَانَقَةِ الۡعِيۡدِ) (कुल सफ़ह़ात : 55)
11...... हुक़ूक़ुल इबाद कैसे मुआफ़ हों (اعجب الامداد) (कुल सफ़ह़ात : 47)
12...... मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)
13...... राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (رَادُّ الۡقَحۡطِ وَالۡوَبَاءِ بِدَعۡوَةِ الۡجِيۡرَانِ وَمُوَاسَاةِ الۡفُقَرَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 40)
14...... औलाद के हुक़ूक़ (مشعلة الارشاد) (कुल सफ़ह़ात : 31)

## ( शो'बए तराजिमे कुतुब )

1...... जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (الزواجر عن اقتراف الكبائر) (कुल सफ़ह़ात : 853)
2...... जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (اَلۡمَتۡجَرُ الرَّابِحُ فِيۡ ثَوَابِ الۡعَمَلِ الصَّالِحِ) (कुल सफ़ह़ात : 743)
3...... उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम, ह़िस्सए अव्वल) (कुल सफ़ह़ात : 412)
4...... आंसूओं का दरिया (بَحۡرُ الدُّمُوۡعِ) (कुल सफ़ह़ात : 300)
5...... ह़ुस्ने अख़्लाक़ (مَكَارِمُ الۡاَخۡلَاقِ) (कुल सफ़ह़ात : 74)
6...... बेटे को नसीह़त (اَيُّهَا الۡوَلَد) (कुल सफ़ह़ात : 64)
7...... सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा.....? (تَمۡهِيۡدُ الۡفَرۡشِ فِى الۡخِصَالِ الۡمُوۡجِبَةِ لِظِلِّ الۡعَرۡشِ) (कुल सफ़ह़ात : 28)
8...... आदाबे दीन (اَلۡاَدَبُ فِى الدِّيۡن) (कुल सफ़ह़ात : 62)

## ( शो'बए तख़रीज )

1...... बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (ह़िस्सए अव्वल ता शशुम, कुल सफ़ह़ात : 1360)
2...... जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़ह़ात : 679)
3...... अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन (कुल सफ़ह़ात : 422)
4...... बहारे शरीअ़त (सोलहवां ह़िस्सा, कुल सफ़ह़ात : 312)
5...... सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُم का इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (कुल सफ़ह़ात : 274)
6...... इ़ल्मुल क़ुरआन (कुल सफ़ह़ात : 244)
7...... जहन्नम के ख़त़रात (कुल सफ़ह़ात : 207)
8...... इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़ह़ात : 170)

9..... तह्क़ीक़ात (कुल सफ़हात : 142)
10..... अर बईने ह़-नफ़िय्या (कुल सफ़हात : 112)
11..... आईनए क़ियामत (कुल सफ़हात : 108)
12..... अख़्लाक़ुस्सालिहीन (कुल सफ़हात : 78)
13..... किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़हात : 64)
14..... उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़हात : 59)
15..... अच्छे माहोल की ब-र-कतें (कुल सफ़हात : 56)
16..... ह़क़ व बातिल का फ़र्क़ (कुल सफ़हात : 50)
17 ता 23..... फ़तावा अहले सुन्नत (सात हिस्से)
24..... बहिश्त की कुन्जियां (कुल सफ़हात : 249)
25..... सीरते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (कुल सफ़हात : 875) 26..... बहारे शरीअ़त हिस्सा 7 (कुल सफ़हात : 133) 27..... बहारे शरीअ़त हिस्सा 8 (कुल सफ़हात : 206)
28..... करामाते सह़ाबा (कुल सफ़हात : 346) 29..... सवानेह़े करबला (कुल सफ़हात : 192)
30..... बहारे शरीअ़त हिस्सा 9 (कुल सफ़हात : 218)

## ( शो'बए इस्लाह़ी कुतुब )

1..... ज़ियाए स-दक़ात (कुल सफ़हात : 408)
2..... फ़ैज़ाने एह़याउल उ़लूम (कुल सफ़हात : 325)
3..... रहनुमाए जदवल बराए म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़हात : 255)
4..... इन्फ़िरादी कोशिश (कुल सफ़हात : 200)
5..... निसाबे म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़हात : 196)
6..... तरबिय्यते औलाद (कुल सफ़हात : 187)
7..... फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़हात : 164)
8..... ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़हात : 160)
9..... जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़हात : 152)
10..... तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़हात : 124)
11..... फ़ैज़ाने चेहल अह़ादीस (कुल सफ़हात : 120)
12..... ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के ह़ालात (कुल सफ़हात : 106)
13..... मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़हात : 96)
14..... फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (कुल सफ़हात : 87)
15..... अह़ादीसे मुबा-रका के अन्वार (कुल सफ़हात : 66)
16..... काम्याब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल सफ़हात : तक़्रीबन 63)
17..... आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़हात : 62)
18..... बद गुमानी (कुल सफ़हात : 57)
19..... काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़हात : 43)
20..... नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल (कुल सफ़हात : 39)
21..... तंगदस्ती के अस्बाब (कुल सफ़हात : 33) 22..... टीवी और मूवी (कुल सफ़हात : 32)
23..... इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़हात : 32)
24..... त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़हात : 30)
25..... फ़ैज़ाने ज़कात (कुल सफ़हात : 150) 26..... रियाकारी (कुल सफ़हात : 170)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

## सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती है, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये **"म-दनी इन्आमात"** पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net